

रञ्जारे ॥ पाछे श्री स्वांमि नीजी लीन ना वि सा साह चारि रे रा-प्राई नव मु
खरावो नी ॥ जो जुम सगरे मोति के मो को दूँ ही करी दे ॥ परे जु बो र पा ही
को हा मे रे ॥ सो ना ने रा क ज व र सो ना रो सो बो रे ड ॥ सो मे त न्ना र के
द्वार प र सो ड ॥ मान कर न ड मि पारे मे जुं म सगरे दूँ दि के का दि
यो ॥ सो न व स व न ने करी ॥ जो जो करी न ल्यों प च न रे ॥ दूँ ही परे रा
सो न व मु खरावो नी ॥ जो मे कर न दूँ ही परी का ही ॥ मानः का र पा
ही मे ने का रो गो ॥ पा भं नि बो रो न ही वारि न ल्प न्ना र ॥ अ प नी मि
न्ना र द्वार ॥ विष्णु प के सो दी ॥ सो न व जो ग मा पा ने भा री नि मि
व स करि दो नी ॥ सो न व श्री स्वांमि नी जी ने न ली न सो करी ॥ जो
अ व क इ ड पा य की पो च हो रे ॥ सो न व न ली न वि सा ध ने अ व
रा की सि न्ना सा व धा नी सो नि वा री मे धा रि सि न्ना भे ने कं ची लो
ज लो ति के म न्द को वा हे री ने का से र ने मे मु र व रा ज गी सो
दूँ चो पा र व ग रे नो दूँ चो नो ही ॥ जो र ड र के दे रे नो ही न्ना
नि वा रो मे रे ॥ पाछे मु ख रा बो नी ॥ जो अ रे बो र न्ना र ॥ इ न ने
मे ली न ना ना न ग र दूँ ची उ हा ज ग रि श्री हा कु र जी को
ने अ प नी चि व स ग रे मे श्री स्वांमि नी जी सा रे न न्ना गी रे सो
न व न ली न ने श्री हा कु र जी को ल कु ज न दे प्र णे ॥ जो अ व क हं
छि पो ने न व श्री हा कु र जी ने करी ॥ जो सि न्ना नी चो सो विष्णु प न
विष्णु व न ल्प न्ना ॥ सो न व श्री स्वांमि नी जी की सि न्ना नी चो छि प इ हं
मु ख रा ज गी स ध न को ज ग र के करी ॥ जो दे पो चो र की वा न र हं
मे री सि न्ना धा रि दी नी हं ॥ जो र दूँ चो ने ग पो ॥ सो ना क पा स न्ना
ई ॥ सो न व स ग रे सि ति के स व हो र दे पो ॥ श्री स्वांमि नी जी की ने वि
ज सा री र दे पो ज ले पा रि क हं पा रे नो ही ॥ सो न व का ड ने नो क
ही ॥ जो बो र ने का सि ज पो ॥ जो र का ड ने करी ॥ जो पा डो करी को भ
भ न्ना पो हं ॥ सो पो ही चो का र ड ड न हं ॥ सो न व स ग रे दूँ दि के करी

नि जी व धा भं न जी तो श्री स्वांमि नी जी को ली न ना को सो पि हं अ प
ने मे री र मे पो दे ॥ जो र पा रं मु ख रा ने अ प ने मे न के गो प भ
छि भं र के द्वार प र न्ना र से न की पो ॥ सो पा भं मि स व न ने से
न की पो ॥ सो न व श्री स्वांमि नी जी श्री हा कु र जी न ली न
वि सा धा न्ना रि स व पि र की द्वा रा उ न रि कं वा ग मे हो प स व
खरि क मे न्ना र ॥ सो न रं स म स स्वांमि नी न सो मे न्ना प्र भ
पाछे स व न ने व न मे प धा रि वे की वि चार की पो ॥ ना स म ध मे
हं नो व र स न ने रा ही ग पो ॥ जो र द सो दि सा छे रे अ न्ने न्ना
द्वारा ने न व स ग रे भ क अ प नो मु ख ला पि व र सो ने नो र व र व न
प्र न्ना र ही न प धा रि ॥ पाछे अ प ने मु ख रा वि द अ च न सो पो ने
सो न रं का दि चं द ने प्र धि क चं द म को उ न्ना रो म पो ॥ सो न व स
गरी मो ति के अ प नी र कुं ज मे प्र न्ना न को प ध रा य उ न्न व व र
सा को भं न न भ र ॥ इ न्ना रि क व न को श्री ने र रा य श्री व धा भ
न पुरा को प्र का र हं ॥ अ व व न को प्र का र श्री हा कु र जी ग प ध
रा व न के सि स व न मे प धा र न हं ॥ सो न रं श्री स्वांमि नी जी
ज भ क स म स र ही वे च न्ना रि स व न न दे वी का म्पा य नी
सं के न वि म ल्प न्ना रि मि स करि व न मे न्ना व न हं ॥ सो न
हो व र सा हो न हं ॥ सो न व स ग रे स धा गो प ग प ने के अ
व धं र स की छ पा न धां श्री गी रा ज की सि ख र नी च वे व न
हं ॥ श्री हा कु र जी र श्री गी रा ज ऊ प र प धा र न हं ॥ सो न रं अ
ने क प्र का र को र न न व चि न नि वा रो मे वि रा ज न हं ॥ व र स
न हं व र सा की सो भा रं वि के कं भ उ दी प न हं न हं ॥ सो न क
न म नो र प धा र सा हो न हं ॥ रा ग न्ना र हं दे पो न्ना र म्पा
र प म वि रा मे ॥ दे र को स पो गौ र प म्पा सु र न्ना सी धा दे र व न म
न म व ज जे ॥ जो व हं न प र व न के ऊ प र मो र न की को रं

कार ॥ ते से हे धन उ न ले चहु दि स ने वर स न हे ज न धार ॥ २ ॥ रा गि
 न द म क न प व न उ को र न धुर स न हे ज न धार ॥ ध्या सी उ म पि उ
 र न ग न ॥ रा गि क धी न म सु ध वि र स न हो उ को क क न र स म
 ग न ॥ ३ ॥ क व र क रं व न म मे र व र स न हे ॥ न व श्री र व ग म नो श्री
 श्री ठा कुर जी सो क र न हे ॥ सो प द ॥ रा ग म न र ॥ न रा सी मे री मी
 जोगी जोग न हे ॥ अ व हो प ध म प ह र हो अ दे पि ता ल व म न द
 दे ॥ १ ॥ अ प नो पी ता व र मो य उ टा को व र स मा उ र न म र्द ॥ मी म
 व प म न र गो प र र ग को हो वि धि वि न र्द ॥ २ ॥ दे हो क र आ
 इ ध र उ न र ड र प म हो अ न हे ॥ कुं भ न द न म म न गो व र्द न
 ध र म र्द न उ टं ग न र्द ॥ ३ ॥ मा प का र श्री र व ग म नो श्री क र न हे
 सो ने से र्द वी न व र ड र म उ टं ग मे ले न हे ॥ इ म र्द वि व न म मे री
 न क र न हे ॥ अ ने कुं भ म ह न ज ह न हे ॥ न हं ग र न प म न
 को प व र स न हो ॥ स ग र प धु प र्दो स वी म वी म व क र ॥ न हं गी
 न नो न न म क र को वि ह र हे ॥ सो म न मे अ नु भ व हे ॥ क र हे म
 ग द क हो न मा प ॥ क र्द क र न हे ॥ र सिक न न के म व नो अ
 धो धो रे मे हे ॥ जो हो न कुर नो ॥ श्री म ह म म न जी की र्द प म मे अ
 सा द सु र ॥ १ ॥ दे व स प नो पा ग पि छो र म ॥ अ नो सी सो स नी रे ग
 को सो नो की अ र नो ग म ग म न के क र्द स ग मि नो वे ग न स
 क र क र च र ग की म जी सि उ र क च री प ह री ॥ न र गे सिं ध
 इ प वो ध नो नो र्द कुं भ ग र का कु म न र्द प की म ग व की हे ॥ अ
 व श्री म ह र ग नो जी के कुं भ मे नि म नो न न र म र ग हे ॥ न मे
 श्री म ह र ग नो जी च ट न हे ॥ अ सा द सु री ॥ १ ॥ ॥ अ सा दो
 को म न व ॥ अ न ग पा ग पि छो र स व ह र रं ग की वि रो जी मे
 भू ज के धी र र ग न हे ॥ सो नो के न उ व र ग न नो ग मे से व छ
 छि क र व ॥ अ प र गि के वं र मा हो र्द न दि न र्द नो र हो उ ॥ इ सि

अ धी र हो र ग की म नो ॥ भ र न हे म न स म प ध म न न धं म
 न को श्री ठा कुर जी कुं भ मे र्द नो ॥ पा छे ध र अ व न व स र्द प अ र
 नो सा न ध र म नं द ल प मं रं ग स म प ध र अ र क र्द लो ॥ न
 हो ने श्री जी के व र वं रो प र ले उ लो व ॥ सा न ध र म प छि उ ल
 वे ॥ प ध म श्री जी के म ह र्दो र ग म ग द नो री को र ॥ र क र्द न
 प ग म टा क प र दे र वे ॥ इ स र दि न र ग धा कुं र मं ॥ र प म व ट प
 र नो स र्द र ग म वि र र व मी की क र म वं जो मे दे र वे ॥ सो न व र
 जोगी मो ह न मे म ग ट क रं ॥ र क र श्री जी की श्री अ च र्द जी
 अ न व न र प स ग मि नी र्द प रं ॥ सो नो न म ग ट न की री हे
 जोगी मे र ग ल र ग हो न की प स व सि हि र र न हे ॥ गी क र न
 रं ॥ क र हे ने छे अ ग र उ को मोग र्दो र मं म र्द सा व न र न
 दि न क र न हे ॥ दो ऊ अ म नो ले न ग वि सा प गी अ र न व
 स न प ह र रं ॥ नो नो र ग रं ग र्द अ म रं सो व र र ग हे म र म
 रं ॥ सो र्द र का र र प ॥ कु म न र्द प श्री र स न के उ व र्द र क र
 स सी स क र नु जोग म न न के अं व न उ री ध र ॥ सो जोग र
 स व र्द प के र स रं ॥ अ न प क र न रं ॥ डो टा मे प र म को म ल स
 र्द म रं ॥ वी च को व र न न र सो र्द र व को म ग व रं ॥ सो नो के र्द
 दि स ल र क न रं ॥ सो कु च को म ग व रं ॥ वी च मे अ ने क रं सि
 क र हे सो अ म र र ग र्द क प र रं ॥ क र न र ॥ सो म न न की च
 री रं ॥ ग र्दो र सो श्री चं र व लो जी की मो र्द रं ॥ वी च मे क र
 स सी स क र रं ॥ न र्द प क र्द र्द प सो न ग र के व री रं
 रो र ॥ सो र म र ग म ह र रं ॥ र ल र रं ग ॥ क र ल र ग न धा
 नो नो न प र व ग म नो र्द प र ॥ न धां स डी की म ग व रं ॥ सा री मे
 र्द ग म र्द ल ड ग न र ॥ पोर री उ व र लो चं र व लो मी र रं न
 रं ग म र्द प र र्द का र म म श्री प नु न जी र री श्री म ह र ग नो जी

के भाव सो ठार वर स्व वर न है ॥ सिंभार न रे न से कुंज न मे र व नों ॥
जा ॥ बा लो के भं ब ॥ प्रथम अदि वासन मग वन ॥ श्री उर को
तम स्व है ॥ गो न रो ह ना र्थ है ॥ गो र्थ सन महं करि द्ये ॥ धंभ
डा जे न को बंद न न जाई ॥ अपदी प करि भोग धर न है ॥ जल सी
समर्पि प्रार सी करि श्री ठा कु र जो को प धर आई ॥ प्रभं ग व
स्व ला न प ह रे सिंभो ॥ पाग न ला पि छे रा ह रे सी छ करे ॥ भंभं क
न के उ न रो रु प है ॥ सो दा भो गि श्री उ लां दे जी क रे न है ॥ श्री क
त्रि वे र ना म्मी भा वे न म है ना ह य पा न था ॥ हे ह स्वा न र रू प
स्वं दा स्व श्री उर को न म ॥ १ ॥ कंद व मे है जो रा हे सो पा नो कां म
को भा व है ॥ ना मे क रे न है क रं व को सो भ न न की को म ना न
कां श्री जी की प्र र गा क रे ॥ ना ने वि छु की लो ला मे क लु व स
क है ॥ सो व ज मे क रं व की को ठा नु को ट छ वा मे ने र क ध रे है
ना ने रं उ का र रा य वा रे को व रा हि रा क क रं व प र व ठि के क
रं व श्री वं डा व नी जी ह प है ॥ सो न न को संग व ना पो व र स्व श्री
वं डा व नी जी को गो र मे व ठि के व र दी रो ॥ सो ना ने को प क रं
गा र्थ क रं व नो म क है ॥ ना ने के व र र म रा है ॥ ना ने स पा श्री
वर दे व जी के नि क र ना है ॥ रा नी जी के हां की र नि जी के हां
भक्त स रे न प्र भू है ॥ उर पा क र न है ॥ हिं गो र कां म की
उ दी प न मा व है ॥ र स पा न प्र भू के न भक्त प्र भू के ना ने हिं
जो रा सिं ज्जा मं दि र मे पा ट प र रं न है ॥ चे जो न था रं भी न
चो को वि छु न है ॥ हिं गो र ना वे रं न प र व न प र न था रं हीं गो
रा नि वा सी श्री प मु ना जी की छु नि न मे प्रथम श्री स्वां मि नी जी
को प ध रा वें ॥ पा छे प्र भू को प्रे मे रं सिं ज्जा मं प्रथम श्री स्वां मि
नी जी पा छे प्र भू नं रं दा रं य के भा व ने प्रथम प्र भू पा छे श्री स्वां
मि नी जी न क वे स र कं ठा म र गा नि म नी पा पो रे नो रं ज री छु र

छां कि ना न् पु र मे र र चि छु क सी स पू ल जल क वे नो क न क क
न पो न के रार व डी मा ला मू ल न के रं मि का गो ज्ञ से पा भो गिं डो
रा वा र्थो दी रो ॥ न रं प्र भू प धा रे न व स व न के मा सिं हि र स
न ॥ जहां प्र सिं हि श्री स्वां मि नी जी न हो य ॥ सो न रं भा व सो व चि
भू प रा ध रे ॥ प्रथम म न हो मे य ह भा व सो नि म्भ उ ला वें क
को न न प र चि न क र न है ॥ सो र म रा मे न र व स न ज ना रो ॥ की
नी वा र्थो चारो स्वां मि नी न को भा व ॥ सो न रं चारो स्व रू प
वि हार मे है ॥ उ न को स वी गा व न है ॥ बा ज भ न न के प्र भू र
रा वा ज न है ॥ श्री जी ह वे रा गु व जा व न है ॥ आ व रा सु दी ॥ ३ ॥
कुरा नी नी ज को भा व नो ॥ ना दे न चं न री को व ना ग पि छे डा ॥ उ
भं गा श्री स्वां मि नी जी के हां द ज न है ॥ न रं प्र भू प धा र न है ॥ सो र
न कुं ज मे रं ज न है ॥ सो ना दि न श्री स्वां मि नी जी रं न प्र भू न के
क र न है ॥ श्री गो वे रं ने प र नी ज को बो न रा है ॥ न रं र कुरा नी नी
ज मं नी रं ॥ स गी रा ज वि है रं ज न के म क र को प र है ॥ स व हिं
न स वी र ज मे न रं र म रा है ॥ क रं श्री प्र वा र्थो नी म र प्र भू श्री
जी को न रं प्रथम हो प ध रा रे है ॥ म ध्या न को सै पा भो ग मे न
है सां मि नी ध र न है ॥ श्री स्वां मि नी जी प्र प ने म नो र्थ कर न
है ॥ न नो र र के न र वान था प वा प्र व स्य वं दी स क र पा रा
आ व रा सु दी ॥ ११ ॥ प वि नार का र स्त्री ॥ सो ना र न श्री ठा
कुरा नी छे क र नी चं को दे ॥ रा वा नि प्र प नो ज न्म भू मि है ॥
सो ना रं प्रे र दे रा न है ॥ श्री गो कुरा न मे प्र भू सें ग र म रा है
सो न रं भा वा न्म सिं ज्जा प र पो रे ॥ सो ना र न म य है वी जी व
न को उ हार करे ॥ सो म सा वि र ह म पो न र प्र भू प धा रे ॥ सो
ना ही स म य म धुरा प क क है ॥ सो दा भा व सो र म रा क है सो
न व व च न श्री जी दी रो ॥ जे मा को स र रा व रोगे ॥ सो ना को मे प्रे

भोव॥ गोकारक रोमो॥ नवपवित्रा पहराये॥ सिधोस्वोसिमीजीरुपप्र
धरुन फं नक रस्ये॥ **॥ १ ॥ ध्यायेनाथो भव ॥** सोनव श्रीभीष
नेउपररागाउराये॥ पाछे हारसीकोदिनरासोहरदासप्रगहि
सेवक॥ श्रीजीओमहाप्रभुजीकोपवित्रा पहराये॥ उपनेप
जिकोवरननकीये॥ नराचोनिधिसिद्धाकेभवनेचरस्योरेगभे
पाटकेहएरनहे॥ वीचवीचमेप्योदनाभननकोप्रभापुत्रा
केकोदनरे॥ पवित्राप्रभाहेवीचवीचमेप्रांक दारहे॥ सोकु
चरस्यानीहेसोप्रभुकेहरदयसोपरावनहे॥ चिछवादीहिनेरा
मेनगावनहे॥ सोभक्तदसोदिसावोहिनहोदरहे॥ भद्रान
होई॥ नासमयपहरने॥ उपासदनहोई॥ नादिनप्रभुप्राकु
नेहापेछेरासासीस्वेनाकिनारीसुनहरी॥ गोपीवहभाममे
सेवछाछिकेवजा॥ पवित्रागपीकोसंगप्रोहिसासनहोई॥ ५
विनाभक्तपराकीसनहराप॥ भक्तनकेनेभक्तपवरनभा
न्यपहराये॥ राखोसोपांशिगटहराहे॥ नानेदटकरिवेचंभं
दनकेछोटाकारिउतसोधीरेधुपदीपभोगप्ररनी॥ **॥ २ ॥ ध्या**
रापीकीभवेना॥ भगवतः॥ श्रीगुरुकोनमस्सुपवित्राधिया
सनरसाबंधनधरदादिवासनकरिये॥ पाछेप्रभुप
हरे॥ पाछापिओभोगप्ररनीकीमोनीकीभद्राटादिराखी
वांछि॥ प्रभुगपागपिछोराहरदीयाकहंकुनहोपिछोरा
कसुमलराजभोगमेसेवछाछिकेवजा॥ धारमेकुंमकुं
मप्रभुनपीदेवीजा॥ २॥ राखोसिद्धिकारिभालापहराईसि
नकप्रसन्नकरिनंदरायजीकेभार्दीपनावेदीहे॥ मां
नकुमारराकनंदरायजीकेवड़ेउपनंदसिनकीवेदीहे
दसरोसहोदासोऊकांधनहे॥ उडपापदीपिछाईभोछपा
सुप्रोहिनकांधेवीजा॥ नधरे॥ ओचंद्रावलीजीसुगारसु

रुपकोकांधनहे॥ उडपापदीपिछाईभोछांधरे॥ सिधामोदिरभं
रुपिछांधरे॥ प्ररनीमोनीकीनादिननेधंकारकछेकेने॥ कहं
पवित्रातेरेकेने॥ सोराभाएमीकोरेयेने॥ पाछेमहरनहोई
भद्रपदवही॥ ७॥ तोउनरे॥ अंगारसमयप्रछाछेमहरनेहो
इतोअंगारसमयउनरे॥ मोतीकेअरनीपरिक्रमाकरिउ
नारे॥ सोनादिनडोलकेनथाहोरीकेगाईये॥ डोलसोउनरे
नवाहोरागाईये॥ राईतोनुनकरिप्ररनीपोछावरकीजे
पाछेहिडोरावाहीदिनवडोकीजे॥ भद्रपदवही॥ ७॥ बागापिछो
राकसुमलराजभोगमेकछसंगिजो॥ तेनभोगमेपूरीसोरा
कीकेखाजासोठकीठुकनोपावेनभेनारई॥ निननयेवख
केभवने॥ नथाइई॥ दिनमेवसोदिनकोसेवानवनीहोईपुह
सेवाकोपरागहे॥ नानेकवित्राकीसेवामेवरसादिनकीसेवासि
हिहोनहे॥ सिधोसगारीसंगमिजोकोप्रगंधंदोवैकस्वरपहं
पवित्रासुखसुनकोपरीयेओस्वोमिनोजीकेभवने॥ पाछकोपु
विनापुर्वनेहुमरिक्कप्रईहे॥ नानेहुमरिक्काकेभवनेवदने
कोपवित्राओमसुनजीकेभवने॥ ननकराहदप॥ हरीनथांछ
करार॥ ओचंद्रावलीजीकेभवनेरेमोनपीरे॥ ओस्वोमिनोजी
केभवने॥ रफामओमसुनजीकेभवने॥ नानसुमितपकोभा
वने॥ हसोहुमारिकोकेभवने॥ स्नेउजगनिर्वेकारदभेइद
न्यादिकभावनेप्रभुकोपावित्राप्रथमपहरावेभेटकरे॥ पाछेगु
हभावने॥ हसरोपावित्रापहरायभेटकरे॥ नथाहोऊपावित्रा
पहरायकेपाछेभेटकरे॥ जोप्रभुनकोनखवनहोइभोहरिनेओ
प्रवतहेईतोहरिनेजोप्रवतहोय॥ निनकोदेइभेटकरे॥ सो
गुरुकेसांगार॥ पहरप्रहरे॥ नथांओनोपनीकोजाय॥ अहो
नकोआनामहे॥ सोपातेमपदिनामोदेवसउनिमहे॥ ७॥ छित्री

नामो हि वसम धम है ॥ भक्त न को धेर रहें ॥ राज को संयोग है नामे
उने भो नम है ॥ पर तेन रा न एक करे ॥ नया धर्म को राम की प्रे
र प्रविभा की ॥ इत्यादि क भाव हैं ॥ राखी बांध न है ॥ कहुं उ कट
हे जाल पाट की रा की पा ने व धारि उ र स न ध है ॥ नया प्रा नि द
ह रा हैं ॥ नाने प्रपु रा न ध है ॥ उ रा पा म ही भो भ ॥ सो धं न प्र
ति रु पा जल श्री म पु न जी धी श्री स्वा मि नी जी को रोग ह न प
उ र उ मा रे का न था खंडु क मा रे का न था र वी र कु मा रि
का पा द के प्रु सु रा ॥ रा सा रं ग ॥ रा धी वं ध न ला ल वी रा
रो ॥ प्रा नि सु रं गा वि वि न ना न रं ग ल ली जी सु रा ध स वा सी ॥
जे सी प्रेम प्र वा हा वि हा रि न ॥ नालि नाले स न का री ॥ उ र न स रि
न ज रा य जोग म गे वं ध न प्री न स ध्या री ॥ २ ॥ प्रा नि प्रु पु रा य
र स्य र हो ऊ ज न र हे नि हा रि नि हा री ॥ स स्य रा स रं ध नि ध
वि नि र ख न प्रु नो न न म न वा री ॥ ३ ॥ प्रु पा ट र रा भि भा
व वि वि ने ॥ श्री स्वा मि नी जी को ग रा मं न है ॥ नाने रं न हो य
स म प्र हो न है ॥ राज गे ग पा छे कुं न मे सो स र्प र ह रा ग ॥ सो
ना को अति रु पा वो हो न मं न न है ॥ नाने चं द रा र ह रा न था मा
र्यो न स र्प पा म व नु ध य ॥ चार म ह र प ह ले न मं न न है चं
इ उ र रा से न पा छे मं न न है ॥ सो कु मा रि का मं न न है ॥ क ह न
स वी र ॥ न रा नी न प्र ह र भू व र ह न है ॥ प्र भू को प्र ह र स क
प ह ले स ध री ॥ प ह ले प्र न स ध री हो य ध री ॥ प ह ले र ध के
स म ध प र ज न ह नो सी र ह न ॥ सो ध ने श्री धि पु न जी र प्र भू
को वि र ह जं न मे न ना य वं जं न है ॥ उ स्य का ल मे सून के धो नी
उ प र ना को रे प्र भू प ह र है ॥ सो न का ल मे पा ट के प ह र ॥ पा ट के
कु मा रि का को भा व ने ॥ सून के अति रु पा के ना व ने ॥ प्र न न को
भक्त न के व र्त्त को हो न प्री प ह रं ॥ सो प्र न न को वि र ह कर के स व ना

ग को धो रे ॥ को रे प्र प र स वे ठा रो है ॥ वि र ह के मं न को रं न ना व नो
नां ही ॥ नाने क ऊ को र ह व न नो री है ॥ अति रु पा कु मा रि का मा ना
दि क को मं न करि प्र भू को उ ना व न है ॥ प ह प्र व लं व सो प्र भू
हैं ॥ न हो नो म धि न हो य ना प प ह प्र व लं व सो प्र न वे र न है ॥ सो
श्री स्वा मि नी जी को वि ना स ग रे मं न मे न को ना ग ॥ पा छे न है सो
मि नी श्री स्वा मि नी जी को रे के क रा रो ॥ श्री चं द रा व ली जी न था
कु मा रि का सो प्र भू मा री न ॥ प्रा रो ग न है ॥ न व रा रो ध र न है ॥ प्र भू
को र ॥ र व श्री प पु न जी सो दे व को नो री जं न है ॥ वि र ह छ ट न है न
व को र के स ग रे ग प्र भू क र न है ॥ श्री स्वा मि नी जी को र स सो
सं न है ॥ दो न क र न है ॥ सो न व मं न नो छ ट न है ॥ प रं नु श्री स्वा मि
नो जी प्र सं न ना री है ॥ नाने प्र सं न क र रा ग र्थ अति रु पा कु मा
रि का व न उ प वा स क र न है ॥ प्र भू को प्र भू मं न के श्री स्वा मि नी
जी को सं ग ले क व ह प्र न स ध री क व ह स ध री ॥ प्रा रो ग व न है
चं द मा स र्प दे वि के न यो ज ल प्र व न है ॥ न व स ध री हो न है ॥
ने क ऊ मं दि र मे प्र भू प्रो ग न है ॥ प्र सा र चं द स र्प दे वि के ले
न है ॥ सो पा ने जो अति रु पा कु मा रि का न हो ले न है ॥ प्र भू को प्र
न ले व को नो री है ॥ प रं नु श्री स्वा मि नी जी को र ॥ सो क र नो म धि क
हं को र मं न हो य सो पा ने ले न है ॥ प ह रा के म ध्य प्र भू रं न
क र न है ॥ क प्र प्र न क प्र रो क ॥ वि सु रा ना म्मा रि श्री म न्द
रा न कु मा र स्य रा ह ना नि न मा रि ध्या नि व न्म र्थ य धा नो म
गो भा य बा स रा ग प दा नु म हं स मु स्त जे न ॥ इति वा क्या न न
प्र प्र स न छो री ये ॥ अति रु पा कु मा रि का रं न क रा व न है ॥ र
मा रे न था प्र भू को उ रा प स हा प हो र ॥ को र प्र का र मं न छ ट म
भू को मा धो क व ह उ धा रो नो री र ह न ॥ र ह रा मे मं थो उ पा रि

प्रभु वेठ नहें ॥ प्रपूर समे श्रीस्वांमि नो जीको जप कर नहें ॥ शुभिर प
कुमारिका सो कह नहें ॥ जो बेगि सांन पुजायो न हो सो मेहें सव
हिकें वेरागि होऊगें ॥ पाछे शुभिर का पाजने सवरो मकार श्री
स्वांमि नो जी सो कह नहें ॥ जो प्रभु पा मकार विरह करि दुखी
क्यो रुखो रु उपाय करि के संन नहें ॥ तव त्याग के पाज वांछि के
पर स्नान नहें ॥ ताते पुष्टि मारग मेठ राग को बो होत ही मांमन
हें ॥ सव ठोद ते कारे दुमिटाव नहें ॥ सो पातो ॥ प्रोद नम्य का को
र मार सोई में साक पार पांन पार सजेहुं अहें ॥ नहं को रम्या
गोष्प कर राग धर्मि स्वांमि नो जी को भयने जगह पा अस व स्थि
कर नहें ॥ इति श्री गोकुल नाथ जो कहते तथा श्री होरे राय जो
कहत उत्सव न की भाव ना संभू रागि ॥ समाप्त ॥ शुभं ॥ श्री ॥

श्री कृष्णाय नमः ॥ श्री गोपी जने वने भाय नमः ॥ २५ ॥ एतत्पुन
न को भावना विवृणोते ॥ प्रथम श्री गोवर्द्धन दार के अंग मोति ने ने
हैं ते नि को भाव ॥ सो मोर सुवा सिद्धा मांदि र की प्रोद मोर श्री
स्वांमि नो जी को भावने ॥ श्री स्वांमि नो जी कह नहें ॥ मोर की नां ईसि
ने करे नो मोर नो कोर सभा मे होई ॥ ठाक वन र श्री चंद्रा व ली
वीर प्रसिद्धा मांदि र पुनिकुं जमो वेराज नहें ॥ नीचे के को ने हो
याग यहें ॥ होइ प्रथम निधी स्वांमि नो जी ॥ श्री चंद्रा व ली जी ह
पयासा प्रभु के वेराजें ॥ इक्ष्वागारहि स श्री चंद्रा व ली जी व ल
वें नखें ॥ नि के वां के वचन सुनावन हें ॥ सोई प्रभु को पुने क
भाव रूप ट कर मार नहें ॥ इक्ष्वागार स्तप कर के कर नहें ॥ प्र
पने श्री अंग के चिन्ह मो दे पा ॥ प्रोद राग कहं कहं नो पाहें

नेक र मारी ॥ मोर हेर को वयो लजान हो पास हो मे दी के नीचे पागि प
र सपे ॥ सो स्वरूप सिद्धा मणी रूप दी वा दिखावन हें ॥ सो असे व
चन पारि ॥ सगरी राभन सुता गोद पांन कीये ॥ उंग को प्रे सो नच हो
ये ॥ जा के नीचे वराग प्रान पास गाप नी न रो वर वार प्रभ
रहें ॥ होय वार ह सो गोति नावे साखा प्रभु को जुनाप वे को प्र
हें ॥ जुं जमे श्री स्वांमि नो जी को हो न भानु रहें ॥ तो सरी गाय श्री स्फ
मि नो जी कुं जने प्रपु वार करि प्रभु को वृत्त नहें ॥ अति निर
हने कंद रा के मो न र वारं श्री र चने मे स्मर्तिहें ॥ सो गिराज के
दोय स्वरूप हें ॥ सिंघाकार ॥ सर्पाकार ॥ उहं प्रभु की श्री स्वांमि
नी जी को रक्षा जो वन मेहें ॥ सो नहं गोर राज नी सर समान को
ने के वर नहें ॥ प्रथम वाव ल देव जी से सत्प सो नि न को गाय
न के सो गा विद्या कीये ॥ सो चले जा नहें ॥ सो नि न के नीचे नृ सिंहे जी
हें ॥ सो हार ऊपर सिद्धा मांदि र के जो को ई प्रपु न सके म को हा
वारे ॥ प्रथम वा मन्त्र के पार पधार नहें ॥ सो नव दार पर नृ सिंहे
जी वेठ नहें ॥ आदि देवि क नृ सिंहे जी प्रभु के नृप नरा ने ने क
सेहें ॥ इक्ष्वागारहि सहा प के पास संयहें ॥ सो श्री चंद्रा व ली जी
कुं जा अमुनाज ल को ली रोहें ॥ श्री स्वांमि नो जी के कंठ रूप नां
मेज न प्रधर म्प न प्रभु को पांन कर व नहें ॥ उज श्री चंद्रा व
ली जी ॥ ताते पंचाभु न में नि सदा ज भोग में से पोदि क वांमभा
ग ऊपर के को ने पर सत्परा क श्री स्वांमि नो जी हृदय इक्ष्वा
के रूप र को ने में सत्परोय शुभिर पृथु मारी का अंगो खे दी
हें ॥ शुभिर पृथु पृथु व दीहें ॥ पास ली रोहें ॥ जो खे दी पीठ कंठ र रा
को पार न पां चार पार न था चार को ने ॥ चार श्री स्वांमि नो जी
के भि कुं ज नीचे पर के को ने वांमभा श्री स्वांमि नो जी को नि कुं
ज नीचे श्री पञ्च न जी को नि कुं ज इक्ष्वागार के को ने ऊपर श्री चंद्रा

वनी जो के नि कुं ज नी वे च र रा पा स कु मा रि पा को नि कुं ज च म के के
 असा प स स ग सी सां मि नी को नि कुं ज च न कां सि पा न प चो सु
 हो को ठ का प र थो जी नी वे पो ठ की ले पो दे हैं ॥ ऊपर अभा भू पा रा
 व स र प भू भू है वि प रो न र स रा को भा व पी ठ क मे बा स्ये अोर
 न र को ले न हें ॥ सो थो प उ न जी वि रा ज न हें ॥ न र र अा व न हें
 सि रा प र न र अा थो सां मि नी जी ने स भा रि के कां ध न हें ॥ करी ना सि
 क थो छे द ज सो दा जो ने क रा ले हैं ॥ कं ठ मे द न री कं ठ थो व न मा ला
 कं ठ ने च र रा गो जं पा ड प र आं ठ वं धा दि क र न हें ॥ थो ह स थ
 क ड अा सां मि नी जी अा गो ह सि वां धे अा स मे हें ॥ व न र मे र क
 स र जो न नि पां र स जो थ क र रा क थो हो सी हो ऊ ह स मे अा
 सां मि नी जी ने प ह रा दे हें ॥ च र रा मे दं ध न थो सां मि नी जी
 के भा व ने ॥ ता हो ने प हं थो अा का प थो सो अा अा क रि न उ र ग
 ट वा रे प ह रे कां ठ मे कि नी वि ह र मे अा ने क टं ध न थो सां
 मि नी जी के स ने थो थो थो थो थो ह स डं चो ॥ रा स को भा व हें का
 हे ने जो व हें न ड टा से हो ने नो ह स की मु ठी व धी हो नी ॥ ल क अा
 गी डं चो ह नी ॥ प हां सो पां चो अा री स मा मि ने मं डं चे ह स
 क रि भा वा दि रा व न हें ॥ न थां डं चे हा थ क रि भू भू को उ ला टे
 भू भू को स न थो के अा प नी द स रा ह स की अा उ री मे कं दि
 ली ले ॥ पां छे क हें जी व ॥ न व भू भू क हें ॥ ह मा रो स न उ स रा दे पा
 स हें ॥ सो दे ड नो आ ॥ न व अं ड उ उ दि रा से ॥ प ह ले ड नो ने अं
 उ छ को र स न हो न हें ॥ न थां म थो द भू भू व स रा दि क हें ॥ ह म
 को द अा के र स को अा उ म व क रा वे ॥ न व अं ड उ उ दि रा से जो
 उ स रा रो थो स नो नो ही ॥ न थां म थो थो वि वे कुं ठ ने प धा रे हें
 सो तु स रा रो थो स नो नो ही ॥ सो उ प र के भू भू अा स न अा उ र
 हो रे के वी न नी क र न हें ॥ अा व ह पा क रि के को ग प हां प रा रो

न वं ग रा स डं चो कं दि थो र नो दे न हें ॥ ह स रा ह स की मु ठी वं धी के
 नी वे र थ क रि के क हें ॥ जो प ह मे रे जी व नी वे गो रे हें ॥ सो मि न को अा
 प नी मु ठी मे ले अा क पा व न हें ॥ भू भू को र कं ग स र प पा ने रे ॥ जो अं
 ग अं ग मे स ग री स वं मि नी को गो ॥ ह स रा ह स रा मे मि न स नी न
 हो न हें ॥ सो र कं म स र प म हा न म र प उ प र कं दि थो पा रे हें ॥ ने
 से म ह र प थो पा रे ध र मे व स थो री हें ॥ प रं नु जी न हो प तो जा ने
 ध री हो रे ॥ सो नो को र्थी पा वे ॥ ना ने व न भू भू न को मि न न हें
 व थो अा का प थो म हा म भू न की छ पा हो रे ॥ न व हो पा वे ॥ ता हो ने
 थो प म नो री ह र कं म हें ॥ थो प म नो जी मे स ग री नी नो हो न हें
 अा के क म का र को नि कुं ज न हें ॥ प रं नु उ प र ने र क म स र प कं दि
 अा का र न की ले हें ॥ ता ने स व को र स न नो ही ॥ ता ने थो जी
 व हें न ध र र कं म हें ॥ पं च र थ मे स नु र व ह थ हें ॥ नि भू भू न की
 थो र हो थि र हें ॥ अा से थो जी गो व हें न ध र को भू भू न स र गी हें ॥ उ
 थो न म हें ॥ अोर क ल्प के नो ही सार स न क न्प मे थु मि र प कु
 मारि का के अा थो अा प हो म ग दे ॥ क ल्पे सार स व ने थो थो उ नो
 थो भू वि थु न ॥ प भू भू ने थो र क ल्प मे थो री नो ही ॥ उ क रं न अा
 थो भू भू नो ही ॥ क ल्पे मि न स वं न्प थो मि व नी ग सि स व ने
 म र नी नं पं थो ज न्प वं द थु र प थो भू ग व न म र न्प
 उ छ म र ग नो न थां उ छि म र गी थ नी व को ॥ न थां उ छि म र
 को म र ग न थो अा मे ने हें ॥ क ल्प न्प नो ने म र र रा नो ने स
 पं च थो र्थ मे अा थु ह स थो ॥ ता ने अा थु ह स थो के स र प की
 भा व नो से वा क न थो ॥ अा थु ह स थो म वं नी ॥ ता ने थो गो व हें
 न कं ध र के स र प की क थ व र ग न की ले ॥ अा थो नी व नी न
 थो पा नी के स र प की व र ग न कर न हें ॥ थो जी थो अा थो
 प नी के ड क र थो न व नी न थो पा नी थो उ स रं नी के र क र

गौरस्वरूप है वृजभक्त ने कहा स्वतंत्र प्रकाशभाव न करे मरणादिक न हो ॥
 हैं ॥ उभर सकी भाव दर्शन में विचार नों ॥ वातभाव ने निराव ने र
 नहें ॥ न नीचा धोने सो सुख न कर ॥ नी क झुकां ही पर न हो ॥ न नि
 या धो नी सुख न श्रुति न का आदि भक्त को विना स्वामी ही सुख है न
 है ॥ वातभाव ने उरु जन के आगे दे प्रेड हाथ ने नहें ॥ प्रपञ्च व
 न कर है दृढ सो लगाव नहें ॥ काऊ को दोष जु है हो न नो ही ॥ ना
 ने श्रीगु साई जी ति रहें ॥ जानि न परमं न न्वं य सो दो सों ग
 ॥ गति नें न दम्य ह तो ये मार रागुरास्ता न हो बुधा ॥ १ ॥ भाभाव
 ने श्रीगु साई जी के हृदय में स्थित स्वतंत्र पर है ॥ ओह स्वामे न व नी
 न सदा एव नहें ॥ श्रीस्वामि नी जी को प्रार्थना मृत्त जी सांभ
 न जी ज सो द्य जी श्र ने क मन्त्र न है नहें ॥ सो भि न को प्रार्थना
 लुधा को सें बंध कराय के प्रीति कर नहें ॥ श्री राधा प्र
 धर सुधा विना मन्त्र ने वीज काई न व भो वे जी ॥ पुट रु व ने ब
 न नहें ॥ सो मृद्वो हृदय ॥ सो भि न को नाथ निवद न कर नहें ॥ तेषां
 वृज श्रीस्वामि नी जी को हृदय क मन्त्र है ॥ सो ना पर पुट रु व ने नी
 नी कर के हृदय को नाथ निवद न कर नहें ॥ मा भव र रा के कं
 कला मे प्रतिविंब देषि च भक्त हो नहें ॥ मानि न के स्वयं मे न था
 श्रीस्वामि नी जी को पुट रु व न ॥ हृदय को टि कें दर्प ना व राय की
 नो है ॥ नां मे प्रपन्न पे को दोष के च भक्त हो नहें ॥ सो या प्र कार
 स ग रे वृज बोध ना नंद हो नहें ॥ वृज भक्त न चाइ के सांछ न है
 नहें ॥ वृहत्त प्रभु कर नहें ॥ इत्यादि क भाव ॥ २ ॥ वृथा म धुरा
 नो ध जी के स्वतंत्र प्रकीर्त्ताव नों ॥ श्री गिरध र जी श्री गुसां
 ई जी के वृहत्त गान जी नि न के टाकु र हैं ॥ सो गिरध र जी गो
 वृहत्त नरूप है ॥ ना ने श्रीगुसां ई जी गो वृहत्त नरूप नो म क रिके
 प्रकार नहें ॥ गो वृहत्त न स ग रे वृज मे बोध नहें ॥ ना ने स ग रे

वृज को देवता है ॥ स ग गी वृज को श्री ना श्री म धुरे रा जी मे हैं ॥ ना ने दयां
 म स्व रूप है ॥ सो ना करिके श्री गो वृहत्त न ध र की नो है विष्णु रो हैं ॥ गौर का
 शिष्टु जा है ॥ सो ना को भाव पर है ॥ जो दोष श्रीस्वामि नी जी को दोष प्रपञ्च की
 दोष स्वतंत्र पर क मे हो पर है ॥ सो पंचांग पर मे कर है ॥ गिरध र जी ने
 विराट् मर्मादा रूप स मुद्र मे मेर तो है ॥ ना ने म धुर न नरूप है ॥ नीचे
 दक्षणा श्री हस्ते संपादें ॥ सो या ने उपर म हा व हैं ॥ जो स गुर न
 को भर्त्ति न वर्त कर राया थी ॥ विष्णु मो मु को स्वामि ने उरि न स्य प्रसन्न कि
 र्त्ति न व दर्प है ना ॥ इति प्रपन्न भाव ॥ पर श्रीस्वामि नी जी को अथाः प्रह
 नहें ॥ तथा दक्षणा भाग श्री वं द्राव नी जी उ न नरूप तो मे न न को कुं
 जा लो रो हैं ॥ तथा गन को प्रगा धि दैविक संपादें ॥ नो मे श्री प मु ना
 जी रे वां म भाग श्रीस्वामि नी जी विरा तो है ॥ नां मे संपाद प हो र र क्ष
 तादि स हैं ॥ श्री प मु ना जी वां म दक्षणा स ग रे भाव सो भि नी रो हैं ॥
 पर दक्षणा श्री हस्ते प मं मुद्रें ॥ सो श्रीस्वामि नी जी रूप क म न
 प्रगा धि दैविक न स्मि रूप ॥ वां म भाग ने स्व की पर स को प्रनु भ व
 करि द क्षणा दि सः प्राद परा न्कि पा र स को प्रनु भ व कर नहें ॥ प
 र भा क विचार नो ॥ उपर दाह ना व क मन्त्र मु व ना न्न करे ॥ जो के न
 पर प्रभु क मन्त्र धरे ॥ सो चो द ह उ व न को भान प है ॥ सो द विम रे मु
 व ना न्न क क मन्त्रा भि मे ॥ तथा श्रीस्वामि नी जी के गुण्य क मन्त्र रूप हैं
 प्या सी वृहत्त क मन्त्र ने रो ॥ ना ने ध र ही नहें ना ॥ व मन्त्र र र न्ना दि
 भाव है ॥ उपर के वां म श्री हस्ते ग हा है ॥ सो उपर को भाव पर है ॥ प्र
 त्ति ने ना नि वार ना र्थ ॥ प्रसन्न ने न स्व ग द पा र ति प्रपन्न को भाव पर
 हैं ॥ जो श्रीस्वामि नी जी को स्वतंत्र पर सरो कुमारी का व है ॥ राधा स
 ह च राय न म ॥ ना ने वां म भाग विरा तो हैं ॥ ग हा रूप श्रीस्वामि नी जी
 को ह स्त प करे हैं ॥ सो ग हा र छोटी हैं ॥ जो कुमारी का रूप ग रे भ क्त न
 सो वृष क रिके छोटी हैं ॥ नीचे वां म श्री हस्ते मे व क है ॥ सेरु पर को भाव

पहरे ॥ जो जाको मुक्ति देनी होय सो चरने पारे ॥ जो मोह माचने परे
राजन् तेने गना विछुष्ट रहे ॥ इति मुख्य भाव पहरे ॥ जो सगरे भक्त न भे
सो सगरे भक्त न भे मुक्ति नै पावे ॥ सो नै श्रीचंद्रावली न भे
जो चंद्रमा की प्रवली को टिके चंद्रको उभि पारो जना पभा न रहे सो
को मभा गच्छ पयो स्वामिनी जो को रास तीरामे पधराय वे प्रप
धर्म सहने ॥ तथा प्रभु श्री स्वामिनी जो कुंजन वने में श्रीज
रन रहे ॥ सो नाने न हो उजियारे चहिये ॥ श्रीचंद्रावली तीरु प सो न
र सत्तु य उजियारे ॥ न भवते तथा च श्री स्वामिनी जो के पुजक
कराहे ॥ नृप्राक न रहे ॥ सो श्री स्वामिनी जो नेकं कर प्रप नो प हारो
हे ॥ जो रपो ठक गो ल रहे ॥ रास में न के भावने ॥ जो कमें न के म
ध प्रभु भक्त न सारे ॥ प्रभे कती कर न रहे ॥ ऊपर पाही ने जो द
नो रहे ॥ सखी मेख नो वि परी न र मरा को भाव श्री ठाकुर जो के श्री
गमे सत्तु पहरे ॥ देय सत्तु प गे दे मे देय सत्तु प काटि में उर स्या न मे
देय नो कामें ॥ सो नै न को भाव पहरे ॥ जो चारि न य पानि श्री स्व
मिनी जो रहे ॥ सो नै न के पास रा कर क सखी रहे ॥ उर स्या न मे श्री
स्वामिनी जो को भाव ॥ सखी सारि न काटि मे छुनि न पा प री के म
भाव के सुधी पा गे द मे कु मारि का स वने छोटी न रहे ॥ श्री का मे
सव के उ प र श्री प पु न जी सव को विहार सिद्धि कर न रहे ॥ पाभा
वने ॥ तथा प्रप क वि धे कुंभ न दास ॥ सर दास ॥ कृष्ण दास ॥ परमा
ने दास ॥ गोविंद स्वामी ॥ श्री न स्वामी ॥ वन पुन दास ॥ नंदा दास ॥ प्रभु
कृष्ण स्वामी ॥ स्वयं क म न को चिन्ह रहे ॥ सो नै न क पान ने प्रप रा
पुन र स प्रप क की न को पान क रा प के पोष न रहे ॥ प्रप क की नी
लागा व न रहे ॥ सो गाने प्रमीकार करि के प्रप मे स्व र पा विषे को न क
र न रहे ॥ सो प्रव श्री ठाकुर जी वने प्रप धार न रहे ॥ सो न व द ज भ न न
की न के उं न गाने न के र न रहे ॥ सो नै उं न गाने न द्वारा प्रभु की रे नी

वन मे को सव धार वे हो दे र न रहे ॥ सेवे रा मु भो न पे पुग न भो न पे श्री ठाक
रे व जी व र र गान की रो ॥ सो गान के समे स गारो स्तोत्र नी ॥ जो र प्रभु ने कुं न
ने श्री ठाकुर न रहे ॥ सो न व विर र क र के प्रभु ने ग स व क को विषो ग हो न
है ॥ सो न व विर र क र के प्रभु ने ग स व क नि कुं न को श्री ठाकुर प्रभु
करि गान कर न रहे ॥ सो प्रभु ने न र स्य रहे ॥ सो नाने श्री ठाकुर दे व जी
राजा परी सन सो कह है ॥ पाछे श्री प्रभा चर्य जी म र प्रभु छुट पा ने को
मे कर रहे ॥ श्री ग सां दे जी विष्णु गारो मे सव ठा र गी ले कह रहे ॥ ना
ने प्रप स पा र प प्रप छ प य हो म गा ट हो र के स गारो श्री ठाकुर
कर न रहे ॥ सो मुनि के प्रभु प्रभु न प्र स ने हो न रहे ॥ सो नाने प्रप स
रु प्र श्री प्रभु मे है ॥ सो म रा रे नी के प्रभु गे क स प प श्री प्रभु चर्य
जी म र प्रभु प्रभा प धारे ॥ सो श्री प पु न जी के प्रभु गे मे ए व र न
कर न रहे मे ए व र को सो नाने स म य रा क कर हो मि स्यो ॥ सो नाने
श्री म पुरा न के प्रभु सी स भ न ना डूं वे ॥ सो से वि स्या न स्व र प ने श्री
प्रभा चर्य जी म र प्रभु न के पा स प धारे ॥ सो न व श्री प्रभा चर्य जी
सो कह है ॥ जो मेरी सेवा करे ॥ सो न व श्री प्रभा चर्य जी म र प्रभु प्रभा
छुट रहे ॥ जो पा स्व र प सो सेवा के से होय ॥ सो न व श्री म पुरा नो
प्रभा चर्य ठा स्व र प करि के ॥ श्री प्रभा चर्य जी म र प्रभु न को गे दे मे
प्रभा चर्य ठा ॥ सो श्री म र प्रभु न जी को हो श्री जी न भ र्यो ॥ सो नै
न हो स्व र प मे दा र स व न कुं न श्री गी र रा ज श्री प पु न जी कुं न
श्री गी कुं न म हा व न ने द गामे व र सो नो दे न्या दे स गारो चिन्ह प्र
पुरा मं ड ल के रहे ॥ सो नाने श्री प्रभा चर्य जी म र प्रभु न म पुरा न के
जी नो म धारे ॥ सो चिन्ह सव पो ठ क मे है ॥ सो द र्यो न डूं वे म रहे ॥ प्र
प्र श्री वि न ना प्र जी के स्व र प श्री म र ना लि व्य नो श्री वि ठ न न
प्र जी को स्व र प पु नः ॥ पुा ले न मा ग म कालि दा क स म भा व नी
इति ॥ कालि दा स्व र प को र को न करारो ॥ सो न व भक्त न को भग

वदस्वुर्मिभर् ॥ भाषांनविरहदन्वाभापवदाहेकदोनेइने ॥ नखेवप
 पुनास्वांसवदरागनखीपदरागा ॥ प्रथमकीस्वांसिनेहीकीभाष
 नेऽनासलिकरिगेभरये ॥ पाछेकीस्वांसिनेहीकीरूपाम कटाक
 लगे ॥ तनेरषामनकीर होर होर नानभर् ॥ नानेगौरषामभ
 येस्वांसिनीभावगेरस्यस्वस्वपप्रपयानि ॥ कटाक्षविद्वत्नेसप
 रषामनाविननेवउ ॥ रषादि कभावनेरषामनासंकोर सनेह
 गौरनाविप्रोगारसनेहं ॥ सककालमेदोहुरसकोप्रउभवकन
 नहं ॥ नरस्पृष्टविधस्वापिस्वेस्वस्वपेवोपयन्यस्थिति रकोपन
 हृदयस्वांगोरषामरुपापाणि ॥ मेरसमेमगनहेपदेरउसंघा
 दुभोजिगेहं ॥ सोनानेकाटिपरदेहहस्तयरेटादेह ॥ समपदं
 गुनस्वस्व करिजनंउजदयं ॥ कीरीटनेन - दन्धविद्वत्नेरामहं
 भवे ॥ रषाकोहस्तमेछेद सहेनसंघकोविनहं ॥ उरयेमेमे
 छिद्रहेनहं ॥ अपिपुनजीपाहीनेवराजनहं ॥ वाममगाभीसं
 यिनीओकटाहसंघहं ॥ सोऽथरहं परसकोपंनकीपमु
 नजीकरावनेहं ॥ नैसमेउन्ननहोपरहं ॥ राकचररागविदे
 मेऽभाभरगाहं ॥ एहमेनही ॥ सोनाहकीलुधिनोही ॥ प्रेमेमांनेहं
 सोऽधीगोविंदरापयजीकेमांवेर्योउसांईजोपधारये ॥ जेवउभ
 थीकल्यांरागयजीकोवेवहकीरनउन्वापनसमपयनवनने
 मारिऽपये ॥ नवऽधीउसांईजीकहं ॥ जोनाइउन्वापनकीडाभी
 हो ॥ प्रभृशसकहृपवाजकऽशसकहृपहोय ॥ परसेवाकोऽपु
 रवर्षागटकीछे ॥ उन्वापनकीडाहीकोनेमहने ॥ **अथ श्री द्वा**
दिकनां वजी के स्वर पक्षी भाषनो लिखने म जोवनप्रभुनसत्पयाने
जोसकीछंदमेथी स्वांसिनीजीवेराजनहं ॥ सोनहंभगावरसंब
दिनीथीराकुदजीकीसर्षापासटाहीहं ॥ सोसिनसोथीराकु
दजीकीवामेकरनहं ॥ सोइननेमेपभृपाछेनेपधारये ॥ सोऽथ

नीमकीकोसेनमेईपरजे जोवनमेपानि ॥ पाछेहोहेपदेऊनेभम
 हो ॥ सोनवकोमलहस्तथीबहुदजीकोजोने ॥ नवथीराकुदजीवि
 रेजीमोकोजोनेनवदोपुजोऽपेरपागटकरिकेंवेनुहारकोसे
 सोनवथीस्वांसिनीजीवनेभर् ॥ सोहेपमुजामेप्रभृजोवेउव
 जावनेहं ॥ प्रोगेदेनेनोकिनमृदे ॥ नवऽपनहस्तमेवलयकरिकेकीथी
 कुरजीकेहस्तकरहुडापलीये ॥ सोनवदेवेनोप्रभृमुसिकोनेहं ॥ सो
 नवमारीस्वांसिनोनेमरास्परोनमयो ॥ जोमनेनेभनेउकाहेनी
 चेहकाराथीहस्तमेपप्रहं ॥ सोथीमरमजीजीकेकरकभनेहं ॥ ने
 यिनकोहुडापहस्तपकदेहं ॥ सोरउपरदकाराथीहस्तमेप
 हं ॥ सोरथीस्वांसिनीजीवेकरकरपहं ॥ सोगतवादेदेदसरहस्त
 पकरहं ॥ उपरनेवोमथीहस्तमेवनेहं ॥ सोथीस्वांसिनीजी
 करारुनहं ॥ सोरनोवेवोमथीहस्तमेवनेहं ॥ सोथीस्वांसिनीजी
 केकरकरनेहं ॥ नानेसरवकेपिसगनोवास्यसेकरनेहं ॥ सोस्वाम
 स्वरपकरिलीलाऽथवोकरनमेऽप्राष्टानकरहीहं ॥ सोथीस्वां
 यिनीजीकेभाषनेऽपेदनीऽपेदेहं ॥ सोरपीठकचोसुटीमेइदय
 हृपकोरमराहं ॥ सोथीवाजहस्तमोमांवेपधारये ॥ इनमेवीपद
 समेथीऽपचार्यजीकेगाईरसरानेथीगेहुनेऽपये ॥ सोथीगुसां
 ईजीमोकरहं ॥ जोमेरेसंतापननोहोहं ॥ सोथीवानहस्तमोमोकोहं
 उ ॥ जोमेरोहस्तपवोहोनेहं ॥ सोमेइनकोदेहं ॥ सोरमेसेमसलीये
 हो ॥ जोमेरोकरेमेनोरिराहोइगो ॥ सोनवथीगुसांईजीकरहं ॥ जोम
 नोनेजाऽपे ॥ सोनवथीवालहस्तमोमोमायकेकरही ॥ जोउममेरे
 संगचोनेहीमोरराहोइगो ॥ जोरिराहोइगोनेपरदेसजाइगे
 जोजीवनकोउहारहोइगो ॥ सोमलिमारगकोविसारहोइगो ॥ सो
 गुंमजाऊनेवाकुरेइगो ॥ सोसेवामेऽपेसेनभररिरागीयेपरनुसं
 गनगोये ॥ सोरथीवाजहस्तमोकोकेनेभनेसोकिराकनेहं ॥ सोथीदे

भावहैं॥ से प्रधरा मन्त्रानंदर पर सकें प्रागे जु छहैं॥ ताते साते
 कयुक्ति ते कहै॥ ससुच रपुज नरपुन॥ तमे ज नमि स्फोर सा
 जु अव नो ही हें॥ ताते सा सुच मुक्ति जु छहैं॥ ताते पंचाध्याई मे कहैं
 जो बीसा तकाष्ट न जु वं दानि॥ प्रे से प्रमन को दो छि॥ प्राप्ता म
 हते तो हर मरा कर न भये॥ मेखर पयो न प्रपां मजी के भं प
 पधराये॥ कहें नो वैराज को खरु प हें॥ वैराज विरह करि पहर
 सभा मि भयो॥ सो श्री मदन मोहन जी॥ प्रन र ध्या न मनये॥ सो न
 वसा रो सु धन्या भिष्यो॥ भं ग के विह॥ प्र प ने प्र गये वि को
 कर ने प्र से न मय ना मई॥ शेर म धरा खक को दी का॥ प्र उ भ
 प्र धा म ने हसर व र जी ने प न प्र पां म जी पाटे॥ विरह की सां म
 प्री मारी रे॥ सो श्री पद कं ध जी के मां धे श्री धा न ल ल ध जी प धरा
 येर ने॥ जो ह मारे सगरे का फुर हें श्री जी सा न स्वर प ता ने भैं
 र मे ज प मं दि र व ल दे न हें॥ सो न जो दा स भा व नो ही॥ सो न ही
 ने श्री गु स र्द जी सा न स्वर प मे नो ही दीये॥ सुख र प प्र भा व हें सा
 इ स गी प का नो म ध्ये प्र प हें प्र भा व नो ही॥ श्री जी सा न स्वर प
 श्री धा ल हें प्र म जी श्री ह मारे का नो ध जी की गोद के ड फुर न ही हें
 ता ने प्र न कूट मे श्री ह मारे का नो ध जी की पा म नो धी मे प धा रे
 न्याये पा ल को न हें॥ प्र सें ग॥ सो र क स म प श्री उ सां र्द जी नि
 र रा ज प धा रे॥ सा न व न्ना दि न श्री गो व र्द न धा रे के य हा सां भि र न
 क कृ न ह नो॥ सो रा प द स म्मी ह ही गो ग धा रे नो॥ पां धे श्री गु सां
 ई जी ने प्र मां रा वां ध्ये॥ जो मं ग ल भोग की सां भि र नो श्री भि र धर
 जी॥ १॥ गो पी व न्ने भ मे श्री गो वं द रा प जी॥ २॥ वा ल मे श्री र सु
 नो ध जी॥ ३॥ रा न नो ग मे श्री गो कुं व नो ध जी॥ ४॥ उ न्या प न भं
 श्री वा न ह प्र म जी॥ ५॥ न धां भो ग मे से ध्या भो ग श्री न र नो ध जी
 ई॥ से न मे श्री प न प्र पा म जी॥ ६॥ न धां र नो प्र से से न श्री भि र ध

र जी॥ १॥ ता न श्री गो ग विं द रा प जी॥ २॥ प्र मां धी वा न ह प्र म जी॥ ३॥
 श्री श्री गो कुं व नो ध जी॥ ४॥ ह रूपे श्री र सु नो ध जी॥ ५॥ म न रा ध
 नि का के श्री ज ह नो ध जी॥ क स के वां स के प्र वं द श्री ध न प्र प
 म जी॥ ६॥ प्र स स स न प्रे भा ग॥ गु फ र को धं ग र क स दा स ग
 व र व न ध ना दि मे॥ वि पा रे गो ग विं द स्वं मी॥ क द म र वं दी के॥ १॥
 रा नं द दा स जी उ प व न के॥ ४॥ कुं व र हूं म न दा स॥ ५॥ पा ग र
 दा स जी स ग रे व न के व न उ प व ना दि॥ ६॥ व ल प गा प द म नं द
 दा स जी पा टी के॥ ७॥ से रा व न उ ज दा स कं द र के न र ह टी के
 ८॥ म लो छे न स्वं मे श्री प मु न जी कुं उ म रे व र के॥ ९॥ हो पे क द
 १०॥ श्री धो प मे दा जी के म नो ध मे गु न वा र के॥ पी न स्वं मि नी जी
 स ग रे म न के गु न हें॥ छि म रा ग मे द न के रा प म न हें॥ उ न
 को स्वे न श्री चं द्रा व ली जी के रो प भा व॥ श्री स्वं मि नी जी न पां धु
 ग ल स्वर प की से वा॥ प्र ध दा स भा व नि वि का र उ ज ली नो मे सा
 म वा र ह स्वे न॥ रा वे मं ग ल लो ल प्र मु रा ग द प न नि ना दि क स
 धी के॥ रा वे वा र द नो श्री दि को मं ग ल स नी व र को प्र मां धी प मु
 न जी के भा व ने रा क र स दा स भा व गु ध को ह स्वं गु म दि क स
 ग ल स्वर प के र स मे म न हें॥ पा म वा र वा र न को न म प र्धे प्र
 व क न प्र प्र म व न को प्र व कुं व ह उ न्म वं ग श्री स्वं मि नी जी
 के म नो धी दि पा रे धु नि र पा को म नो ध र्ध से ह रा कु मा दि का को
 स नो ध र्ध दा ह की रे ज न प गा ग व ल न के म नो ध र्ध ने जु क ट र
 स दं न क र दा ग र्ध॥ हो पी धी प सो दा श्री के म नो ध र्ध ची रा श्री
 य मु न जी को म नो ध र्ध ने नी प प र द नी उ दा हो न स॥ धो नो स व
 न छि प्ये र स॥ चि को र श्री स्वं मि नी जी को उ न री का ख नी र ह
 गा को धे र॥ प उ का श्री स्वं मि नी जी के न र गा उ प र ने प्र मु नो ध
 न ह का को सो ना के उ प र स व न श्री स्वं मि नी जी को चो जी उ र

स्वकेऽप्यंगसिंहा र सोमिनी श्री स्वांमिनी जी के मनोर्ष की निम्न
 नौ न न प्रेर स्वांमिनी जी की सखी को मनोर्ष श्री स्वांमिनी जी की
 रावे पुगल स्व रूप के श्रंगार में श्री चंद्रावली जी कुमारी का अंग
 दि श्री यमुना जी सव में साक पद श्री गिरि राज की कंदरा साक प
 र के द्वार पर पुलिंदी जी को स्मरने साक पद कुच ने प्रगटने ॥ फूल
 पद श्री स्वांमिनी जी की नासिका के अंग धने प्रगटने ॥ वास धरा
 र लीने ना जी की कुंज उदर ने प्रगटने ॥ सोई पद स्मरणी के किं
 ने श्री निरुपा न सखी कुमारी का मन हे रा श्री यमुना जी रत्न
 ने श्री निरुपा न सखी कमल चोक वृज मध्य में सुम श्री यमुना जी के
 ने चोक कुच मध्ये कमल चोक वृज मध्य में सुम श्री यमुना जी के कु
 छति न ॥ फोन श्री यमुना जी के कपोल ॥ सुपा री कुमारी का के कु
 च चना श्री निरुपा के देन रवे न ॥ वे न न श्री यमुना जी के अंध
 प ॥ सोई श्री निरुपा सोई कुमारी का अंग मध्य नलीने ना
 जी सो फ विसाया जी ॥ धनि पा म म स्मरणी ॥ एन श्री स्वांमिनी जी
 को खेद रंग अंध रा मुन ॥ न थां श्री यमुना जी मिर च सीत क र
 सांमिनी श्री माया खरी वंदी कुमारी का के कुच ॥ वंदी के नटु वा श्री
 स्वांमिनी जी के ॥ ताते उत्सव में सुव्यसेव के नटु वा श्री स्वांमिनी
 जी के ताते उत्सव में सुव्यसेव के नटु वा चं न के मगद के दोर श्री
 स्वांमिनी जी के वेसन के कुमारी का के धांस के श्री यमुना जी के
 वोज के कुमारी का के ॥ स्मरन के श्री यमुना जी के मनो रत्न के सु
 निरुपा के धी सो रंग अंध रा मुन सो वंधे ॥ सुगंध श्री अंग को
 गंध धे वर श्री निरुपा को उर स्पल चो व ॥ न श्री यमुना जी को उर
 स्थला ॥ न से वी श्री निरुपा के अंध रा ॥ गेडा श्री स्वांमिनी जी को
 उर क नटु र दं न र पत पा के ठ क नटु अंध रा मुन मे वा नी गेडा श्री
 यमुना जी को सुव्यसे वानी नटु वा श्री यमुना जी के कुच वन
 मं ॥ श्री स्वांमिनी जी को उर र चो खरी प पची कुमारी का के क

पोल क प्रेर ना ही श्री स्वांमिनी जी को उर स्पल चार नो ग वर द
 नी पीरी के नी श्री स्वांमिनी जी को सुव्यसेव के नो छुति र पा के
 सुव लकी र न र व दान देन सन ॥ सलोरी श्री यमुना जी के कपो
 ल ॥ र व न मं ॥ श्री स्वांमिनी जी के कपोल ॥ खोर वडा कुमारी का
 के कपोल उ परे ठा छुति र पा के हृदय ॥ चंद्र कला श्री स्वांमिनी
 जी के कपोल ॥ न र र सा श्री यमुना जी के कपोल न ल र क पो दे न
 क्षत सिख र न व ही श्री यमुना जी दे र व ही छुति र पा मुवा अ
 नोन जो वना के कपोल ॥ माल पवा र नो के कपोल ॥ न व प्री श्री
 स्वांमिनी जी के हृदय ॥ ति ल गु ड के ल गुवा छुति र पा के अंध रा
 अंध रा पा के अंग सान जो वना के र स्मति निगी नी कुमारी का के अंध
 र दं मुं ड न ॥ मिर च सीत का रानि ल व ही सखी न को र स दे वरी र नो
 को र स चो वर को खरी र कुमारी का के अंध रा मुन ॥ मनि का की खी
 र श्री स्वांमिनी जी के अंध रा मुन ॥ से जो व की खी र छुति र पा के
 अंध रा मुन ॥ सेव की खी र श्री यमुना जी के अंध रा मुन मं ॥
 न को र खी र सखी अंध रा दिन धांस के र श्री यमुना जी ॥ इ प व न श्री
 स्वांमिनी जी के कपोल ॥ गुल गुल श्री यमुना जी के कुच के दो
 र ॥ व न श्री स्वांमिनी जी के कपोल म र री कुमारी का के मं ड छु
 ति र पा के गे र की प्ररी कुमारी का के हृदय मे र की प्ररी छु
 ति र पा वेसन की कुमारी का हृदय प्ररी श्री स्वांमिनी जी के कपो
 ल ॥ गे र को मो र न भोगा कुमारी का को उर र मे र को छुति र पा
 के वेसन की श्री स्वांमिनी जी के चो मर को कुमारी का के ल रा
 को श्री यमुना जी के ॥ प्रां व के र स को श्री स्वांमिनी जी के उदर
 वार श्री यमुना जी प क वान श्री स्वांमिनी जी के कपोल स कर
 पा ॥ र श्री स्वांमिनी जी के ने व प प डी लोन की अंग सान पो व
 न के सुव्यसेवा श्री स्वांमिनी जी के क र न ल र गु र मा श्री यमुना

जी के कुच ॥ खार का भूँडा श्री प मुना जा के कुच ॥ खवा का भूँडा श्री
तिरु पा वर की श्री स्वा मिनी जी को मस्त क वा सो दे मगा दे श्री स्वा
मिनी जी को प्रधरा मृना ॥ पै पा अतिरु पा को प्रधरा मृना नी दे
क वो से श्री तिरु पा के कपोत ॥ रोव को क वो से श्री तिरु पा के कपोत
श्री य मुना जी के उना व को उल कं द श्री स्वा मिनी जी को र सप्त
व नी को उल कं द अतिरु पा को वे सन के व ड श्री स्वा मिनी जी
उ दे के व ड श्री प मुना जी पे ड म्ब की हो टी उ से पा मु व न से
रो पा अतिरु पा को प्रधरा मृना सि व र न श्री य मुना जी को प्रधरा
मृना ॥ र ही अतिरु पा को प्रधरा मृना ॥ उ ना व पा क श्री स्वा मिनी
जी को र स वार म पा क कु मारि का को ॥ प्रो म को वे त सा रु अति
रु पा को रो हा को कु मारि का ॥ प्रो वर को स वी जन उ हरे को म्ब को
नारे जी को श्री प मुना जी सु हा रा रा न सी को नाम सी गुर की सा मु
की के प्रधरा मृना प डी स वी जन सु र मुरा कु मारि का को प्रधरा
र वं न व ना सि के लो ने सि र च के उ प को प्रधरा र वं न सि र च सी
न कार मा ड श्री स्वा मिनी जी को प्रधरा मृना ॥ नारी व र अतिरु
पा को उ च सं को ग स म य ॥ व को न रा अतिरु पा के कु च वि हा र स
म य ॥ इ र अतिरु पा को कु च वि हा र स म य ॥ उ पा री कु मारि का के
कु च वि हा र स म य ॥ उ न का दा सु जा मु न श्री य मुना जी के कु च
के ना श्री स्वा मिनी जी के कु च वि हा र म य ॥ इ र व श्री स्वा मिनी जी
के कु च वि हा र स म य ॥ उ न का दा सु जा मु न श्री य मुना जी के कु च
वि हा र म य ॥ प र मां न न ही स दा ही सं को ग ॥ अ न मु अ स ही न
प्र म्ब अ रो ग न हे ॥ सो श्री य मुना जी को प्रधरा मृना क ट र न स
स वी के कु च उ ग त स र प को वे प्र को ग स म य ॥ क क डी र नी
के कु च मुना त स र प को मि न स म य ॥ उ हा रा श्री प मुना जी
के कु च सि गार प्र सा न स म य से व प्र सा न नो व ना के कु च स

पो स म य प्र म र न प्र सा न नो व ना के कु च ॥ वि हा र स म य सि व र
सा न यो व ना के कु च ॥ सं को ग स म य क म र र व ना त यो व ना के कु
च ॥ वि हा र स म य व र र र सा न यो व ना के कु च ॥ वि हा र प डे द र
श्री स्वा मिनी जी को र स नां ॥ म र ना श्री स्वा मिनी जी के दे न ॥ प्र
न स म य र डे म मु व के दे न ॥ अं गार स म य चि रो जी मु व के दे न
वि हा र स म य वा द म अतिरु पा के दे न ॥ अं गार स म य म्ब ल
अतिरु पा के दे न वि हा र स वि हा र स म य प्रो मि र च प्र सा न प्र सा
न नो व ना के दे न अं गार स म य गो अ न ना न यो व ना के दे न ॥ वि हा र
स म य र न र वी कु मारि का के दे न अं गार स म य कि स पि स मु मारि का
के दे न वि हा र स म य ॥ क प्र र अतिरु पा के मु गं ध ॥ उ ल व न ल श्री
स्वा मिनी जी को प्रधरा मृना ॥ सं को ग स म य न यो प से ना प्र म
ज ल पी टा भ न श्री स्वा मिनी जी को प्रधरा मृना सि व र न म न श्री
य मुना जी ॥ च ना की दा र मु व के भ व उ दे की श्री य मुना जी मं ग की
कु मारि का ॥ न प्र र की अतिरु पा ॥ मो ट स पी ज न की ॥ सो श्री स्वा
मिनी जी के प्रो गे व रो नो ही प्रो व न हे ॥ गो ने मं ग मे ने मो ट व न की
न ही ॥ सो य र स न मं दि र मे ने मं हे ॥ सो श्री जी के य हा वी न न हे ने से र
गे र मु व ॥ सो स वी ज न स ल मं दि र मे ज व वी ने श्री जी के य हा वी ने
रो ही र न सी के ॥ सी हा नो म सी के ॥ वो च रो सा न्व की के स न उ डी अ
तिरु पा के ॥ प्रे म न पा क मु व ने र स ॥ अ र के व ड मु व को से पो ग
रा म ना अतिरु पा को से पो ग ॥ रा डे सी न का र क टी स श्री जन को
सा ने उ न्स व मे न ही ॥ गो ने उ न्स व मे न ही ॥ सो न क ला वा र के सी न का
र ॥ न र यो वा मु व के उ ड र मु सं को ग र स ॥ म को मे वा वि प्र यो ग स
म य उ र व के र स ॥ प्र य ना मु व को वि यो ग र स ॥ पा प र सं को
ग प्र सा र पां च री वि यो ग ॥ ए जी न सं को ग कां जी वि यो ग मो हा
रा क सं यो ग मं गो रो सं यो वी ग ॥ ई व को र स सं यो ग को प्र धरा म

ना ॥ फलार्हेक विहार पाछे अनुपांन गोपी वेच भर्गव पांरमें ॥ सो रहक
होरो वडे चमचारानामो गये सो रहवेना ॥ चमचार सो नेरु पेने लानमं
दिरमें आठ है दू गोपी के भावने ॥ सो रहव भव भुक्त के पहारा चार दहन
जितने जितने भग्न के वेसव के पहारा न सी से वारो रनो ने गये
सक को भुजि न पातु मारि का आर श्री स्थां भिनी जी को हरे दयच
मवाकर पड़े पान न रूप के भुजि न पाछे टेकु मारि का वड़े ॥ जो इकु
जि न पाछे टेकु मारि का इरो श्री पपुना जी सिं धार न न लीसा
जो की मोद ॥ वहा रो सगरी स्थां भिनी जी के भेच ॥ जो इवरा श्री स्थां
भिनी जी को कट ॥ रह को र सप्र बो धनी ने हो लनाई ॥ जो प्र बो ध
नी ने हो लनाई ॥ उ सव मे सांमानी ॥ ४ ॥ सिंवा ॥ पे टा को र एक ॥ २ ॥ का
छ के वरा ॥ ३ ॥ सीन कुंटा ॥ ४ ॥ अन सव ही मे वही ॥ १ ॥ सक र पारा
२ ॥ मेवा नी ॥ ३ ॥ सेव के ने डवा ॥ ४ ॥ जो दाम पा क ॥ ५ ॥ सिंसा पा क ॥ ६ ॥
लोपा क ॥ ७ ॥ भा म फल पा क ॥ ८ ॥ सूर न पा क ॥ ९ ॥ पे टा पा क ॥ १०
गुला व पा क ॥ ११ ॥ भारो पल को गिरी को पा क ॥ १२ ॥ सिं व नी को
पा क ॥ १३ ॥ दार सी ॥ प्र मा व स्था को प्र व स प धरी ये ॥ न व ने नो
चं न को न च क सी रा करी ये ॥ रा व में गाल द सी प्र मा व स्था
र को च दी न ही ॥ दी सां भिनी के भा व सं प्र रा म ॥ प्र प ज प प्र का र नि प
न ॥ उर न ही मा ॥ ना प सो प वी न स भ र नी ॥ ज ने ड वारे को मा ॥ ना
प्र व स च ही ये ॥ मर ना वारे को ज ने ड के प्र पे द्या नो ही क ह
ने जो ज ने ड ह सं वं धी है ॥ प्रो र मा ॥ ना प्र स सं वं धी है ॥ जो ज
ने ड को ल राने प्रो र ही न जा नि हो र सो न प हरे ॥ हे र प प ये न मा
ना भ ग व द धम से व व र्णा को प्रो धि का र ॥ सिं मा ही ने ज ने ड
इ र नो कां म न प्रो वे ॥ प्रो र मा ॥ ना इ र नो म नि पा क ॥ १३ ॥ गं ड र
नो नो लो चि ना नो ही ॥ जो ज ने गंगा जं ॥ न धार ने छ द ने सो गंगा
ज क हा वे प प क ॥ प्रो र श्री प पु न ज न गाय के छ र मे रह रे

न ने ड प्रो व ज ने ज ने रु मा ला को द रो न वे ए भ व को करि ॥ पाछे श्री
प्रो व ज ने श्री ग सां दी जी प्र प ने गु रु के स्वरूप को हरे प में विन
न करि दे उ व न करि म ग व द नो म ने न उ ही ये ॥ प्रो हरे ह क भ्य क
रि मां न करि नि व क करि न प क सी ये ॥ सो न हां श्री प्रो व ज ने श्री
को व रु पा वि चारि ये ॥ गुण श्री स्थां भिनी जी ह पु वे गु के म ध र
स सं पो ग र स वि पो ग र स व भ रू प श्री ग सां दी जी श्री वे च व
श्री जी ॥ वे गु मे साने के इ सा सो वा न क ॥ न भे श्री भिनी र ध र जी
न हां प्र ध र ध र न रे ॥ धर्मो क प ॥ न हां क ह ध र्मे श्री जी सा न स्वरूप
भे ते प्र न कू ट को म नो धी ॥ प ह भै र व वी र्थ ॥ प ह वि ह न भें ड न
प्र मा वारी है वे टे ॥ प ह ज स धी जी हा प प क रे ॥ प ह श्री जी के उ स
व को प्रो ग र प्रो हरे सो न ॥ गो पा ल में न को स्वी कार वे र भ न व व ल
ध र्म पे मा र ना र व र्हे धार का र के ल ग की ये ॥ प र वा ल क मे छ ॥ ध र्म
वे गु मे प्र ने क र ग रा भि नी ॥ सो स ग रे व ह न न क उ व स व स की
जन ॥ न ग रे वा मो ह र रा स को म ध म स्म रा र्क रे ॥ प्र व प को सो
पा प्र का र करी ये ॥ श्री गि र रा न मे प्रो ह डार सो ना को भा व प्र ह रे
जो वि न कू स नु रा वि न की ॥ न हां क ह ध र स जी न हां रा म को प
धार न है ॥ सो न सी गंगा ऊ प र रा क हार ॥ न हां न र द हा स जी
प्रो र सो र मे ना स नु रा व ल क हार ॥ शं भु ना व ने मे न हां कुं भ न
रा स जी ॥ गो वे द कुं ड प र रा क हार ॥ सो ना स नु रा प रा सो ली
सो न हां सूर द रा स जी ॥ प्र प प रा कुं ड प र रा क हार ॥ न हां प्रे न
स्वो मी ॥ उ र भि कुं ड प र रा क हार न हां प र मा न र द हा स जी ॥ गो
वि द स्थां मो की कू द म र्गं डी प र रा क हार ॥ न हां गो वि द र क म्पी ह
ह कुं ड प र रा क हार ॥ न हां ध र मा न र द हा स जी ॥ च न उ ज रा स
जी ॥ सो पा प्र का र भा व ना करि वे स व को प्रो व प की रे द स ने से
वा स व क रे ॥ जे सो म नो र्ध हो पा ॥ ने सो सिं गार करे ॥ वा गा व र्जु सा

रकोरलज्जकीयो नही ॥ जोव जमेतो मेरो घर है सो पाते जोव सेव
सेवेरा धारी पने पने बुर्जुना पन बेटावन तत्तन लक्ष्मण दस
क थो कुतः ॥ जो मरु प्रख्या गा मरु पहे ॥ जो सेमा पके तन की
आश्रय करे ॥ नवदध प्रभवे ॥ ने सेव जू है ॥ जोवनक मल्लकार
हं ॥ ओर लीला पयो गी है ॥ ओपगोविका स चरुविका स मनुवि
नरक पखुरे खुले ॥ ओर जुवेना प्रकल देरी प्रतिन होय ॥ ना
ने करे ॥ सर दोमू न मल्लिका ॥ जो आनोविक के लोलाव जमे सन प्र
नोविक क संमिगो है ॥ से मुगल स्वत पने सव प्रगो है ॥ अथ
छोरे चुको भाव ॥ अथ वसेने हेतु ॥ ओ प्रभारन की प्रहणा है
कुंज पके ॥ नमेनु लाट प्रगट भयो ॥ जो कोमल ओह लकी
गाय ॥ जो वसन लप नव पद भव भयो ॥ जो नख दशन के प्रल
भयो ॥ जो कंकला की डोरी है ॥ चित्रा विचित्र रासे प्रगटी ॥ उन ल
हस्पने प्रवीर प्रगटी ॥ जो नेवन के प्रहणा प्रणम चने क
दाक्ष ने नान प्रकार के प्रल प्रगट भयो ॥ ओर ओ प्रगने के सर
प्रगटी ॥ जो स्पाम कटाक्ष ने नखां श्री प्रमुना जी ने चोपा प्रगा
लो ॥ जो वसेनहा स्व विनोद उदीपन भाव करे पाके विहाय पा
प्रकार कुंज प्रमुगल स्वत पविहार गोला करन है ॥ सो दायाल
कथारे नोही ॥ जो वदर हाऊ स्वत पानि दामे उठ कते हैं ॥ जो द
सो से स्वरूप कहते हैं ॥ उहां सो दू सरे स्वत प के स्थित को ज्ञान नही
है ॥ य ॥ इतने मोवि रह ना परो न है ॥ ना ने कुंज मेगो विमरि
उफेर न है ॥ श्री स मरि तु ॥ सो प्रभेन ना पके उपयोगी चेरन
अरग जगुल कवन रसपीन न करन है ॥ जो अरग जग वंदन
के सर प्रेग के न प ॥ उल्लव न लुर मथ मथिर क न है ॥ सो य
है ॥ अथ के दू सरे स्वत प को स्ने न होई ॥ ना पमिटे ॥ ओ है ना वरी वे
यो नीन की मा जग गही ॥ प्रने करंग के मरु लको वरे प्रा भूषन

ने प्रगट की तारस की प्रथि वयने प्रोषम मेर प्रम ह प्र डर ना डर न है
 यना प्रध रान न को पांन ॥ विरह सख सने न हने कुं ज स गरी न म हरे
 हैं ॥ वरन के सगरे पा न डर ज न है ॥ सुकि जान है ॥ जो सगरी वस्तु मे
 उर न हो न है ॥ सो पा प्र कार जो व पर उ है ॥ पाछे दो ऊ स ह प्र कुं
 जने न का छि हार पर डर हो न है ॥ न व व की रि न हो न है ॥ प्र व
 रि न ॥ जो विरह पाछे र स व ह न है ॥ सो ते न मे व रण म प्र म के च ह
 प की प्राभा श्री स्वा मि तो मे र्हे प्रे नो वि छु पु न उ क्त व ती न
 व ग प ले मु र ली को न न है ॥ न थां स्वा मि नो को ग ग ॥ न थां स खा
 जन के न न ने को प न मो र ह डर डी उ र प्र ने क थाने प ग ह म
 सो प्र म को न न दे छि मो र न न कर न है ॥ जो स गरी स की न प र
 न थां स ग रे व न मे नु ग न स ह प के र स ह प प्र न क टा क्ष प
 र न है ॥ सो व को व र स न है ॥ सो ना करि के प्र ने क पु न व री व न
 थ क न की सो भा न प के न न है ॥ जो स ग रे व न विरह ह प्री मी
 स म ने स र वी ह नो ॥ सो र स प र ह री न हो न म है ॥ सो ना करि के
 स्वां मि नी न प वे लि न प्र म को स ह प न पा न ह प न न वे छि न
 म है प ह व स ने नु ॥ प्र प स र दी उ प्रे र क व र पु ग ल स व न
 प म ह व के ड प र वि र ज न है ॥ न व श्री स्वां मि नी नो के पु र
 र वें द ह प चें ड मा को छि जे पा री द सो र स व न म में म हार स
 ह प के ल न है ॥ जो स ग रे व न विरह ह प्री मी व म ने स की ह नो सो
 र स प र ह री न हो न म है ॥ सो ना करि के स्वां मि नी न प वे लि नो
 न मे र्हे श्री प्रे ग की की लि न प्र ने क को लि न प ॥ सो ना करि मि म
 क प्र का स थ पो ॥ प्र म को प्रे ग म ह र प म ध न प्र का स है ॥
 प र नु श्री स्वां मि नी नो के प्र व चें ड करि के प्र री प्र का स श्री
 प्रे ग र प प्र म को हो न है ॥ जे से स र रि नु के प्र नु सार श्री
 मि नो नो ह के स र प प्र का स है ॥ सो ना करि प र म सो भा प म

न गी प्रे हो न म है ॥ न थां ग जी र नु हो न म है ॥ स र री र को न न वे गी
 प्र न न सो गी हो है ॥ न थां प्र ने क मी नो री ग प्री र के प्र म प्र र
 प्र ने क प्र का र के छे टे व डे ना र म ड न सो भा दे न है ॥ जो श्री पु
 ने ना मि का ने स्वा म चो न न है ॥ ना ने सो न ल में द सु गं ध व
 ह न है ॥ प्रे र लो क के चें ड म प म के क म ल क म्पे र नी स की प्र
 ने क स्वां मि नी प्री र हो है ॥ सो मो नी न को मा ला से दे सुं द र स री
 व री म र र है ॥ न हो प्र ने क न प प मि के रा स म ड ल व ज मे री
 न है ॥ प्र ह मं नो ॥ प्र व ह मं नो र नु प्रे स सि स री र नु के प्र का
 र मि ल न हो न है ॥ सो ना करि के विरह न प ह री हे जो न है ॥ सो
 ह र प प र म सी न ल हो न है ॥ सो ना करि के कुं ज मे सी न के ल न
 है ॥ सो न हो प्र मि सो न ल सु प दा प क है ॥ सो न व श्री ठ प्री मी
 के मु र व ने प्री री दे वि क प्री न प्र ग ट हो न है ॥ सो ना ने उ नि म ड
 नि म सो मि नी म क न के प्र ग र पा मि ह हो न है ॥ सो प्र म प्र नु म
 व करि प्रे मी ग क र न है ॥ सो ना ने सी न का ल मे न म प्र का र को सो
 मि नी म री र मे हो न है ॥ सो प ह प्रे प्रे र नु को प्र का र ॥ एक दिन
 मे छे प्रे री नु व ने को प्र व सो प्र नु प व प्र न क र न है ॥ जो
 मे ग ला ने र प्र मी ग न म र्दे व से न री नु को प्रे मी ग प्र वो ध नी ने
 मा ह सु री ॥ प्री री री मे व से न री नु प्रे प री र प्र सो र न
 न है ॥ सो वार प री री न व दे सो र स व जी नो र्दे व से न री नु
 ना ने सी न का ल मे प्रे ग न प्रे मी प्र व न न है ॥ जो व से न प्रे व मी
 ने का नि के सु री ॥ २० ॥ नो र्दे वी री मे व से न री नु ॥ प्रा नः काल
 ने द स प री री न व दे नो र्दे र है न है ॥ ना ने व ने नो ध री ॥ २०
 में मे ग ला र न प्रे मी ग की री ॥ म ह व से न ॥ र ज प्रे मी ग र न ली करि
 पाछे प्री स म री नु ज नो र्दे व प्र प न प्रे मी सी न ल सो म प्री

कृतेऽप्रादिधरनहे ॥ पाछे भोग के दर्शने रहत नहें ॥ नवभारगामे
 पुने कवजभक्तन के कटाक्ष श्री ठाकुरजी के कटाक्षने भु र स
 रूपवरसावरसावनहे ॥ सोनहोमारागमेव धीरि वै तुको भो
 गप्रभुकरनहे ॥ सोनने भोग के दर्शने वही वेद नंद हो नहे ॥ सं
 द्याऽप्रारतीने वा लभोग ॥ यहसरदहि जुगो हो हन उजतये
 पापो नवजभक्तन सोहस्य कटाक्ष हो नहे ॥ यहनि कुंन के
 भवनेहे ॥ भीतर नंदालापमेन पां निरुं जमेऽप्रागे गावनहे ॥
 पाछे सिंहरि जुनि कुं जमे से न करावनहे ॥ सिंघा भोगाऽप्रोद
 दयऽप्रादि विसर पाछे भु पा न धरी ॥ दर्शने छहद सदस
 दारी योग करि जु होय ॥ पाप्रकार निरुं जमे ॥ दस १४ प्रका
 रके भक्तहें ॥ सोनिने के रस को प्रभुऽभुभव करत नहें ॥ सोन
 हागजदि नदऽस लोकि कहें ॥ कोई समयादिवस को लो लभे
 सा सा न को लो लो विविपरीति को मन हो नहें ॥ सोनवन होराय
 के काम परत नहें ॥ सोनवन हो श्री स्वां पि नो जी के सदा नसधि
 कनके सकोऽप्राभा नरगउठ नहें ॥ ताते दिवस को प्रकास स
 वलीन है जानहें ॥ प्रधि पासे रानि हो नहें ॥ सोनहाक छहरी
 सन नो हो ॥ सोनवचुं रउरव परस्पर प्रवने भक्त न की चार हो न
 हे ॥ सोनने श्री स्वां पि नो जी के सुखने सुंदर हैं वंद्या सोरर कऽगु क
 प्रगट हो नमयो ॥ के समेऽप्रने कपुष्य सो लोऽप्रादि केऽप्राभयरा सो
 ई कटे वट नारा मंद न प्रगट हो नहें ॥ सोनवरसको इदोप न हो न
 है ॥ सोरो न वि पा से न खिर हमेऽप्राभयराऽप्रागारागदस्त विल
 हो नहें ॥ मोनो न के हार मानिक के हार फल को माता दूद नहे अप
 दोऊ स्वरूप को हो नहें ॥ सोनवध्यागदररागार्थे न पाप्रु नऽप्रा
 विखेरहें ॥ सो वी नन केऽप्रादि वस को काम परत नहें ॥ सोनवध्या
 स्वां पि नो जी के कराने होरा के नऽगु छुं दर ता टंक हो नहें ॥ सोना

मेने स्वप्न ग वहे र के प्रकास करत नहें ॥ प्रवरन की कै दे प्ररन की
 रनकुं जमे के ल नहें ॥ एही प्रकार गेन द्वारा समय समय की राग
 रागि नो प्रागट हो नमई ॥ जोऽप्रने क सांमिनी वसुऽप्राभयरा
 सब गुण न स्वरूप ते प्रागट हो नहें ॥ सोना ते लो अविमंदि र की
 सांमिनीऽप्र लो कि कसु राव विचारियें ॥ प्रभुऽप्रापुद पा की रमक
 न कोऽभुभव करावें ॥ सोउत्सव के होयें ॥ सोमभक्तऽप्रने क प्रका
 र की वसु सो प्रभु की सेवा करे ॥ सोम नो प्य कहोये ॥ जो भन्या छी
 प्रपने न जमक्तन परऽभुपट्ट कर रागार्थे प्रागटे ॥ सोने भो
 जपने भक्त उ दार कहें ॥ ताते उन्मव श्री प्राचय र्जो श्री उ सां
 ई जी है वी जी व न के उ दार का धावु मी उ व्य श्री सांमिनी जी
 द्वारा सार वृजभक्तन कोऽभुभव नयो ॥ भादो सु हो ॥ ई ॥ श्री व
 द्राव लो जी को उत्सव प्रागट ॥ सोमगरी निरुं जको सेवा प्रागट
 करी ॥ परकि पारस को छुटि करनवासी ॥ रंनरा कट सो प्रभु द
 न के मिस प्रथम गोरस प्रधरा मृग न की रे कराये ॥ जोरा सो
 लव मे कुति रूप प्रभु मादि का के रस दान धन ने रस निभ्यगी
 लामे श्री स्वां मिनी जी ने श्री ठाकुरजी ने प्रथमो ॥ जो भु प्रभोर वृज
 वधु न सो विहार करत नहें ॥ सोमो ते द्रक कऽप्राधिक सुख है ॥ सो
 नव प्रभु कहें ॥ जो उंमनेऽप्राधिक सुख नो ही हैं ॥ जो उलार पस
 स्वकी परसहें ॥ स्मृते प्रभु मिदि हैं ॥ परं उ पर कि पाया व मे हैं
 वो हो न प्रो न हे ॥ रस है ॥ ताते रसमात्र कर रागार्थे ॥ सोनवध्या
 स्वां मिनी जी प्रसे न हो व के कहें ॥ जो धन ने रस ह मद्र को पर रस
 प्रभु भव करायो ॥ सोनवध्या ने दरा पभी के दार प्रभु प्रगटे नव
 ध्या प्रभु भक्तन की पहाओ श्री को रनि नो प्रभु के श्री स्वां मिनी जी प्र
 गटे ॥ सो दोऊ स्वरूप पर कि पारस कोऽभुभव को हो ॥ प्रन कट
 मे समस्त भक्त न के भावरूप सांमिनी कोऽभुभव को हो ॥ सोम

रुजव होने के पद प्राप्ते ॥ सो त हं सात्वकी भक्त प्र नेक मनो ध कीये जो
 गोपाष्टमौ को गाध चराव न भि स श्रो द हाव न निन्मा सिद्धा भक्ति नि
 कुजा स्थिति सत हं पशु पंथी सवन को र सदा न्यसिरे ॥ वसेन पंचमी
 ने दे न ध ॥ ना सी स खे ल हार का म के ड दी प न भाव प्रगट करे विहा
 र कीरे ॥ श्री नां य जी के पाट न व श्री उ सां दे जी के पार प धारि सग
 रो प र सां पि नी ॥ वेगी कार की ले डेर न ड स व च उ र्ध भक्त न सो ॥ नि कुं ज
 विहार प्रथम नि उ न भक्त को खे ल ॥ पाछे सात्व की प्रच्छे रा न सी पा
 छे नो म्भें सी ॥ न था प्रथम श्री स्वां मि नी जी ॥ पाछे श्री प मु ना जी पा
 छे कु मारिका ॥ पाछे शुभित पा स व र ज की ड तो पा पा ट ने कुं ज में
 विहार ॥ पावे जा को दे वी जी व न ही ॥ प्रारम्भ के उ हार की ॥ आत्मा हि
 जे रा मे प्रप न ने कुं ज में विहार ॥ पावे जा को दे वी जी व न के ड
 हार की ॥ आत्मा ऐ डे रा मे प्रप न ने ॥ कुं ज में प्रभु सं जा ड ॥ न रहे ॥
 र भक्त न के म ने र थ सो ख दा दि रा वे ॥ न था ता ह र ती वै स व के ड र
 प धार ॥ को दी प स ने जो ड उ त्सव मां न ने ॥ श्री उ सां दे जी स प्रद र स
 न प्रथ की ले हे ॥ इत्यादि क ड स व को भाव ॥ प्रथ प व के भाव ॥ सो
 पर्व को भाव यह है ॥ जो प्रभु न को र द्वा र्ध भक्त उ त्सव मां न ने है ॥ न
 धो सं व त्स र ॥ वे न सु दो ॥ १ ॥ को नो व की डार ॥ रहे आरोग्य रहे ॥ असा
 दो प्रभु ॥ आछे कान को गो प व र सा दि न को कु र्वा ल र द्वा व ध न र
 द्वा र्ध ॥ नो रा न दे वी प्र न्न प्रभु ॥ मि न ना र्ध कि न प द स मी स हां वि
 जय ने ज प्र ना प व द न रहे ॥ हो गो दि वा री द स रान गो हार रूप चो द स
 ये गो दो स स व नो स हो या ॥ जो गो प नी हो र ने गो हार म ही नाम र मि
 ली भं गि हो व ॥ हो री मे प्रभु को वि वा ह स धी कर न रहे ॥ नारी प र
 हो म न रहे ॥ जो गां ठि जो र न रहे ॥ गारो गा व न रहे ॥ दो ड स्व रू प की र
 द्वा र्ध सं क्रानि में ॥ न था सो पो नी ये गो दो न व स भो जन प्रभु की
 र द्वा र्ध ॥ जो र ना दि न प्रा ता का ल ॥ प्र ने क उ प द व ने प्रभु की र

द्वा र्ध ॥ सो प र व मां न ने ॥ दि वा रो प्र बो ध नो दो ड प र व नो है ॥ दि वा रो प
 र व नो है ॥ दी प द न ह र री मे स स व भक्त म न्द ॥ प्रा व न रहे ॥ जागर रा
 सग रो रा न हो न रहे ॥ प्र बो ध नो को कुं ज मे सग रो भक्त ॥ प्रा व न रहे ॥ न हं
 आ ह र खे ल ॥ प्रा दि च उ र्ध भक्त जा ग र न की रे वि र ह ना घा नि वार न
 कर न रहे ॥ भो ग ॥ प्रार नो की रे ॥ प्रथ प ना को भाव ॥ प्र व प न के भा
 व व र न रहे ॥ बं द न का न कुं ज को पा न रहे ॥ जो भक्त प्र प ने प र प धार प
 वं द न ॥ आ ग जा सी न ॥ न सां मि ग ने ॥ प्रा दि भो ग री वि र र ॥ अ नि प्रभु
 को नि वे द न करे ॥ सो न ल प ना पा न क रा व न रहे ॥ उ ज स्य र ओ वं द
 व न के भ क द र्शन करे ॥ सो न ल हो न रहे ॥ सो न प ना मे दो प भा व जो
 अ ने द रा प जी के पु न रा ॥ प मि से क कर न रहे ॥ सो सा ग रो व न दे र क न
 के प्रा व न रहे ॥ न था प्रभु न सा हि न श्री प मु ना जी में नो व रे व न ॥ सी
 कर न रहे ॥ र थ प ना को प्रभु र थ प र व के ड के श्री स्वां मि नी स धी न सा हि
 न नि कुं ज मे प धार न रहे ॥ जे कुं ज की प ना श्री वं द भ न न जी के प र स
 की स्त्री प उ न जु ड र न रहे श्री स्वां मि नी जी ॥ सो न हं प्रभु न स धी भं व
 धारि प धार न रहे ॥ यह श्री वं द भ न न पु र की प ना ॥ जो नै लं ग दे स में
 कार कुं भ जा व रहे ॥ सो न हं वे वा सी चं पा र न्ध में श्री आ च र्भ जी को
 प्रा गट न रहे ॥ श्री नां य जी प र्व ने ने ॥ सं व त् ॥ १४ ॥ ६ ॥ आ व रा ग व दी ॥ ३
 गां ठि सी मे सां ग ना गे र वा को ॥ आ सा दी नी ॥ प्रा गट न को भाव ॥
 सं व त् ॥ १४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ आ व रा ग सु दी ॥ ३ ॥ पू र्ण म द ने ने मो दि र स भ र थो दि
 ना ध ॥ मं द थ स व ड ठि ग यो ॥ पा छे सं व त् ॥ १४ ॥ ५ ॥ मे फे रि व न यो
 वै सा ख सु दी ॥ ३ ॥ के दि न श्री आ च र्भ जी पा ट वे ठा रो ॥ पा छे सं व त् ॥
 १३ ॥ श्री उ सां दे जी सिंघु मं दि र मा गी को ठा स म रा रो ॥ प्रो र श्री न
 व नी न प्री या जी श्री प्रा च र्भ जी म र प्रभु नो धा ट ॥ प्रा ग र ने न थां प पु
 रा को वी व मे रहे ॥ सो न हं श्री प मु ना जी मे ॥ आ प नै उ ड की म रा रो ॥ त व न
 ने ड सो र गो प्रा रो ॥ सो ग ज न था व न के मां धे प धार रो ॥ पा छे प्रभु न के

गजनलेश्यापो ॥ शेरश्रीमपुत्रानोपजीवमरादेनीकेप्रागेकरायेति
 ल्यो ॥ सोमहाते श्रीमपुत्रेराजोपधादे ॥ शेरश्रीविह्वनोपजो
 प्रसर्दजीकोजन्मभयो ॥ सोमहादिदिवसएकवांसराकासीनेपय
 रायनायो ॥ शेरश्रीद्वारिकांथजीदरजोकेदारनेप्राये ॥ शेर
 श्रीमतेकुलनांथजीश्रीमहाप्रभुजीकोसुसरारिनेप्राये ॥ शेरश्री
 गोकुलचंद्रमाजीमहावनपयंकस्ताराकीवाहिरिस्वयश्रीप
 पुत्राजीमेनेप्रापिमये ॥ सोमहावननेपधादे ॥ शेरश्रीका
 लहस
 जो श्रीप्रसर्दजीकेवतिवेके श्रीगुरुजी ॥ सोमपुत्रामेप्रापिप्राप
 र्थजी ॥ सोमहातेनवश्रीपुत्राजीमेनेनेरिप्राये ॥ शेरश्रीवा
 लहसश्री श्रीपुत्राजीकोरेराकाकेवनाये ॥ शेरश्रीमदनपे
 हनजो जन्ममेनेप्रादेहे ॥ शेरश्रीनेहरायजीकोउत्सवप्राप्तसु
 हो ॥ कोश्रीपसोदाजीकोउत्सवमाहसुदी ॥ हेकोशेरश्रीगुरु
 जीकोप्राहरनसुदी ॥ श्रीपसोदाजीकोद्वयमेपधादे ॥ जोकु
 लरसुखजन्माष्टमी ॥ **अथचंपाप्रकोशं कृतम् ॥** उकटसरदमेदि
 पारापारसुदी ॥ गोकर्गपुनकृतमे ॥ होरोडांतेकेटभरेपु
 खमांतेपुवकारोधार ॥ सिज्यामेगुनालप्रवीरधरे ॥ चोवकी
 चोतोधार उकटधार ॥ सोमादिनकेटनभरेभावसोगुनाल
 कीदोरोपासरापेसोभावदेभरेपाछेमुकटधार ॥ नाहेनफेहन
 भरेभावसोगुनालकीदोरोपासरावे ॥ सोमावदेभरेपाछेमुक
 टधार ॥ होरोडांतेपयोनेकीनेपाहादिपापोरभाव ॥ श्रीपु
 त्राजीकेकुंजसरोवारेप्रादिसुरनअमनेवजभूमिश्रीस्वांमिनी
 जीकेहृदयनेप्रागतनेहे ॥ शेरश्रीतीतराजजीकेकुचनेप्रा
 रनहो ॥ वसुजनाश्रीस्वामिनीजीकीरोमावकीदे ॥ पशुप्रसी
 श्रीस्वामिनीजीकेप्रागनेजोश्रीस्वामिनीजीकीपंचनचप्रा
 नोकिंकश्रीपुत्राजीकुंजप्रादिजन्म ॥ **१॥** वज्रभूमि ॥ गोवर्द्ध

नश्रुति ॥ **३॥** हस्त्रादिशकाम ॥ पशुपक्षीपवन ॥ सोपेपंचन
 चहे ॥ **अथसोमिनीकीरेवेकीरोनालेप्यने ॥** प्रथमवीदीकीवी
 दी ॥ काथोसेर ॥ **१॥** धोपोछोमो ॥ सुकरदंक ॥ **२॥** श्रराजाटंक
३॥ गलचौदंक ॥ **४॥** कस्तुरीनोना ॥ **१॥** नोग ॥ वरासनेनाप्रा
 धो ॥ मरुसववायेखकटकेकपटखनकीरेगुनावननसोमो
 नीबोहिले ॥ हाथसोलेवदेनही ॥ सोनाकेनीयेकुलेनकोपरस
 श्रुतिनेसोकरने ॥ सोनाकीगोनीछोटोछोटोबोदिराये ॥ श्रीनां
 कजीकीनीनिश ॥ तथा ॥ **२॥** तथा ॥ वेजमकुलकेयदा ॥ **२॥** तथा ॥ **१॥**
पजीरोकीविधि ॥ सोठसेर ॥ **१॥** सीरापावटेर ॥ **२॥** अजमाइनपा
 वश्राध ॥ धनीपाप्राधपा ॥ कर्ममिस्वच्छलंक - येसवधा
 शीलकटिकपरखनकरि ॥ धीमेमजिबरा ॥ निगुनोडादिनदुववा
 दिये ॥ **अथद्वंद्वीकेनदुवाकीविधि ॥** वेसनेसेर ॥ **१॥** नेउदकेबुं
 नयेसा ॥ भदिनासिगाटोवांदिद्योकीकटादेमहाद्वंद्व ॥ फलदि
 नेदुवाकांधनेलोपतोहीनेदरावेदहीपाहेनिगुनीवासनीमेरा
 निगुनाधजारेनदुवाकांधयो ॥ वंदीकटोसेर ॥ मानिसेर ॥ वरावर
 सनी ॥ **अथवेवरकीविधि ॥** मेदावासोमिनीयोसेर ॥ **१॥** धी
 सेरमेपाव ॥ जलसोवांदिप्राप्तीभांतिउकटोकरसकरो
 च ॥ जलधारपरनौजांनिरये ॥ सोनवपीकीकटार्धनातीकदि
 परलेकछवलुनरि ॥ पाछेकटोरोककरछीसोहीनीधारडा
 रये ॥ वेवरवधनोजय ॥ सोजबप्रेयेवधनवकादिनिगुनीचा
 सनीमेपागिरये ॥ नखांहराजारेयेनानेपर ॥ **अथवज्रनकीरे**
विधि ॥ मेदासोमोनाविसेसदेसगरीधीमेंवोरोनागरोवांध
 रे ॥ पाछेकोरोसोनाजगारेउकतीनेसवरकरसकरदिश
 निपनरोरसहोपपीकीकटादेमेपनरीधारजारेयेवधा
 पजुकेनवगादीवासनीप्रादेये ॥ तथा ॥ वराधरकादेये ॥ **जो**

भक्तिचासनीदीजे ॥ चंद्रकला नाते पर दुरादुर कर दीये उपर लाविना
छेदको ॥ चंद्रकला मेमद पुरी सो धारी पारि चासनी दोऊमें ॥ स
नहर को **दुवा की विधि** ॥ दधः पूछे ना नो हरे नवगाटे कपश में
वांछि ॥ पानीसवका टिसि न पद पीसि के नरम करि पाछे चाप
रके बूने में मो नगारे का मो मित्रा गगारो वांछि डारो मेसे वपाहि से
मंदः प्रांच सो पर पवका रिगा टो चासनी में वरास दार बीजारे
तुनु वा वांछि रो तिउनी चासनी प्यारि दे ॥ **दरस की विधि** ॥ पहिले
दिन चास रको चुनसे ॥ १ ॥ रां दुसे ॥ १ ॥ पानी सो कनक वांछि रा
खीये ॥ इस रोदि न कचोरी सो वेति राकः ॥ प्रोर खस खस के दाना
नगाड क राई में मंदः प्रांच सो घी मे नही रो ॥ **देहरवही की विधि** ॥
चांम रके बूने को मो नवि से सदे वा मे घोरो सो धी जगदि फेर राक
होही मे पानर विछाच मंदः प्रांच सो नगरे पनरी चासनी प्यारि दे
वरास दार बीजारे रो ॥ **सिखर नवी की विधि** ॥ उर की दारस
र ॥ स्या की दार से ॥ भिजोइ छो नका हारे करि पी हो पीसि गा रो
करि विशेष फो नरो ॥ पाछे घोरो सो धी जगदि वही पारि दे ॥ पर
पक हो र नवगाटी चासनी मे पगभि पाछे सिखर न मे जगदि प
वकी विधि ॥ गर को चुनसे ॥ १ ॥ में मो नसे रा वडगारे उर से र
ः प्रां जगदि ॥ रचक पानी जगदि गाटी कनक वांछि रो ॥ मि र च द न द
बीजारे रो ॥ रांन को टांकि राखि दे ॥ सवेरे घी मे पुवान रोये ॥ मा
न पूवा की विधि ॥ गर को चुनसे ॥ १ ॥ उर से ॥ १ ॥ जगदि पानी जगदि
रीये ॥ रांकर स करि मि र च द न बीजारे रो ॥ घी मे नई मे रास प
न रो करि क राई मे घी घोरो सो जगदि क टोरी मारि जगदि उर जगदि रो
ने पर दुरादुर का दीये ॥ नवाणी की विधि ॥ चना की दार दधम
वांछि रो ॥ पाछे कुराटि के चुन करी से ॥ नां मे वरास पान्च वरा वर
ला र बीजगदि पुर न करि रा पीये ॥ पाछे मे दार को रचक मो नरे घी

करि गी नर पुर न मरि क चोरी सी करि नवा पर घी जगदि मंदः प्रांच सो रोऊ
अर से क रो ॥ **तिन गु नै की विधि** ॥ वेसन को घोरो सो मो नरे गा टो वांछि
ही ने रु रा सो से व पारि घी मे नारि ना मो ति न छीने के घी मे से के ना के
घी नर जगदि से व जगदि तुनु वा वांछि रो ॥ **चतु ली की विधि** ॥ चाप र को बू
नसे ॥ १ ॥ प्रोर से र पव ॥ नां मे ति ला छे ने से ॥ १ ॥ जगदि ही मारि र
हर दी जगदि न कगा टो वांछि न ले वी की नो दे कुड़े ॥ के पारि घी मे नारि
ना ते पर ॥ जो न वारी र व जगदि रो ॥ १ ॥ जगदि क बरा से ॥ १ ॥ रां की गा रो चा
सनी नां मे ॥ पूरा खल मे कुराटि पनरो करि न प्रां ॥ मिनी नो छे रो सो
करि चासनी मे जगदि उर नमा करी को नो दे पारि मो विछाच दंक दंक
करि कन रो करी रो ॥ **चोरू की विधि** ॥ पान्द से ॥ १ ॥ वी चे स
नी में मि र च वै स हो म मारि घी मि जगदि प्यार करि दंक दंक करी रो
नित नां करी पान्द से ॥ १ ॥ करी चासनी में ॥ छि जो नि न से ॥ १ ॥ जगदि
उर पा पही को नो दे कन रो करी रो ॥ नित वही उर दे की दार से ॥ १ ॥ की
विछि करि नि न से ॥ १ ॥ छो न जगदि ॥ पूरा हो म मि र च जगदि वही छो रो
छे हो पारि न्या वये ॥ सर वही मे क डु वे ने ल मे नरी रो दे वरी नि न नि
न वही की ॥ पाछे पे छे वा के छो ल क के दंक रो नो मि न द छो रो रो
को नो दे करी रो ॥ न प्रां वही मो हो करि मुका च रा विये क रु ॥ जो ले न
से नरी रो ॥ **मनिका वीर वीर की विधि** ॥ मे द से ॥ १ ॥ मे मो न से रा
व ॥ १ ॥ दध मे गा हो गो टि सो क मे म नि का करि दध मे जगदि रो ॥ चा
म र की र वीर की विधि ॥ चांम र दै सा हो प म र से र दध पी छे
च ना प की र वीर की विधि ॥ गर को द दार से र दध मे वै सा रो प
म र से र दध में ॥ से व के न द ही विधि ॥ मे द से ॥ १ ॥ मे मो न से ॥ १ ॥ गा हो वां
छि से व पा डि चो जो चासनी वरास दार बीजगदि तुनु वा वांछि पे
नर के चुन मे से र मे मो न पा व ॥ गा हो वांछि जु हो पानरी कुराटि के वर
वर दुरा सु गंध जगदि तुनु वा वांछि रो ॥ गर को चुन वरा वर घी मे न

दूध आदि से दूध गोब सो फेरि पर पक कहि नामे पर वरा जगिरेये ॥ दूध
 गोबिधि ॥ जाही दूध को क पदा पर न पोहि न बा प द के डरे से ॥ ग्रामि
 दूध गोब सो गो पद सो न ॥ ग्रामि पनरी प्ररी उमनि गोबों ॥ दोष दोष के
 वीच वरा धरि दगों के राखिये ॥ नीमरी बिधि दोष कटाई पर नामे
 गोबिधामे निमो करी से ॥ पाछे ग्रामि न काटि नो जिये ॥ चहै पर दगों
 राखी से ॥ पाछे मरु दर दोष रह न दीजे ॥ पाछे एक रा क पा न मेमि
 दूध पर नो चै कहि पाछे पारि ॥ गोब पर धरि चै क दी ॥ जग नो मे
 जाहि मे दूध ॥ गोब सो होई ॥ ऊपर मिथ्ये पीस न थंभ राई ॥ गोब
 मही न पीसि वरा स बरा मेमि ॥ गोब पारी पर पुर काई से ॥ न वपर
 पक होय न वनि का मिये ॥ न थंभ पारी सो निका सि बरा ॥ उर काई से
 जव पर पक होई ॥ न वाने का मिये ॥ न थंभ पारी सो ॥ नि का सि बरा
 पुर काई से ॥ सो न पर दूध री प्ररी दगों के ॥ पडो ॥ रह न दीजे
 मेरु की प्ररी ॥ न दरा से र ॥ १ ॥ सो न प्रवदे ॥ ज न सो गा हो वों धि ॥ प्रव
 रो द वारा म पिस्ता दारा व मिथ्ये काटि दे ॥ गोब ची वरा स मि ॥ गोब प्र
 रा धरि प्ररी वी ॥ नि पी मे नरी ये ॥ गोब न भोग को बिधि ॥ गोब के बूँ
 न भेद ॥ १ ॥ मे उनि म दूध नो मधुम वरा वर पोंड वरा व र पी मे नरी
 नो चै उ नरी पोंड मे वा सुगंध ॥ सो न च मर को ॥ सो मे पोंड धी वरा व
 र वैन को पी वरा व र पोंड र नी ॥ मेरु की पी वरा वर पोंड र नी
 जल को ठी को न दूध जगरी से ॥ साठा को मे दरा से र ॥ १ ॥ मे नो सेर दी
 पदे प २ ॥ जगरी साठा सो करी से ॥ पाछे पी से र डे टक ॥ राई मे जगरी
 जिये ॥ नव दूध स वरु पर जाय जु न परे ॥ सो न व दूध से पान मे उ
 नगरी राखे ॥ पाछे पोंड से र ३ ॥ को चास नो करि ॥ जव जने वी की चास
 नो होई ॥ न व न र्थो साठा जगरी दूध ॥ दूध र ची मे वा सुगंध ॥ जगरी
 से न वरा क पारी मे करी से ॥ वारा म धी ल के दगारे ॥ गोब के रस की से
 र ४ ॥ पी नो नो करि से र १ ॥ गोब को र स जगरी दूध ॥ गोब के रस जिन

नेस माय नकां सेरु गारि हो ॥ इना इची वरास गारि हो ॥ ना इना गारि हो ॥
 सन के दूक वापकी हो ॥ सेना ॥ सेवरावर ॥ १॥ छोडार न रकोइ नो ॥ २॥
 हरा मे सुगड गारि हो ॥ १॥ **रसदा नठरी को वीधे ॥** ॥ गेर को चंन से
 २॥ मे सो न पाव ॥ गारि चो धो मग ले ज न सो वां धर हो ॥ नो न भ
 ग न के वां धर हो ॥ एक भा ग दी की क लार् मे ह ॥ पाने मे रं च क न से ये
 ३॥ धी पा की हो ॥ न व का दि क दि मग रो च न चार मग क ठोर क
 ४॥ वे ली मे न रि ग दी न स नो प्यार् मे ॥ **वडे ठोर छे दे साटा को हो**
 न छे दे मठरी पक वा न मे रा ॥ प्रथ सेर ॥ विना मो न गा हो वां धर
 धागी मे छु री सो ग र ही न की र क री ये ॥ **एक गेर को चंन सेर ॥ १॥ ना**
 मे सो न ॥ धो हो इति पर न के पर न हा थ सो पि ला इ नो र्द क री हा
 धमे करि ॥ **झति छे हो क टो री सीत ॥** प्रथ हो व ना सा सो करि के धी मे
 न रि के गा दी चा स नो प्यार् मे ॥ वा ट ग र को मो टो री ये ॥ धी मे न रि
 ये लो हो पा ॥ न व न ल मे गु ॥ मि ला इ गारि ये ॥ पर प क हो प न व
 उ न रि ये ॥ स कर पा ग चं न न थां मे दा से र ॥ मे सो न प व ॥ दे गा
 टो वां धर हो ॥ जो ग र रो वे ति छु री सो का दि धी मे न रि चा स नी गा दी
 गारि हो ॥ प प ही वे स न को चं न से र ॥ १॥ नां मे सो न पा व गारि हो
 मि ला इ गारो वां धर प न री प्र री वे ति धी मे न रि जो न ग री ये ॥ **र**
वडा को वीधे ॥ ॥ सेर मे पा व मो न दे प्र री वे ति गु ॥ र को प्र र न दे न व
 गा करि धी मे न री ये ॥ न थां हो व डा सो करि धी मे न रि कं चा स न
 प्यार् मे ॥ **गुर मा को वीधे ॥** ॥ मे दा से न मे पा व सेर मो न दे गा टो थं
 धि रं च क न ल सो लार क सर को करि धी मे न रि ग दी चा स की धा
 री हो ॥ **कोर को गंरु ॥** प्रथ प व न म ॥ प्रथ रो ट पि ला छे दे छे दे वं
 क करि दा वा मि थो इ ॥ ना र चो वरा स मि ला इ प्र र ग करि र की
 ये नां मे प्र र ग मि ला इ मे दा की प्र री करि प्र र ग म रि न रि के ना
 री चा स नो प्यार् मे थां इ गारो हो ॥ जो दि के ना हो लो वा क री ये ॥ ना की

प्र री वे ति मे दा की प्र र गारो धी मे न रि ग दी चा स नो क न छे मे न रि ऊ पर न
 वे टि हो ॥ न थां वे से ई र ग पि ये ॥ लो वा को गंरु ॥ लो वा गार मे मे व ग मि
 के सु गं ध को प्र र न क र मे दा की प्र री म रि न री ये ॥ च स नी ल प
 दि ये ॥ न थां वे से ई र ग पि ये ॥ व र फी इ ध र लो वा से र ॥ नां मे से र हो
 इ की गा दी चा स नो व ना सा सो करि सु गं ध गारि व मं लो वा गारि
 धा रो मे करि क न रि चोर व टो क री ये ॥ **ना सो हो इ ध सो चो हा मग**
 दी सा टा सो हो र म ला इ पर न न पा वें ॥ नां मे सु गं ध मि थो गारि इ
 ना र चो ये पा इ ध का चो मा धि हो ॥ एक क र छी इ ध गारि मे इ ध
 ॥ चो के रि पर प क करि ना ने पर वरा गारि हो ॥ दूसरी वि ध वा ही
 ॥ इ ध को क प डा को र पे ट न वा प र फे रि हो ॥ प्र ति मे रं च चो चो ॥
 ॥ इ ही ने ॥ न थां ना नो करि मा धि हो ॥ सु ध का चो हो ॥ ना को मा धि हो
 न न चानि क से ॥ स्नेह क क टो र ग मे व रा स मि थो ॥ प्र ति मे नो मि न
 ये ॥ प्र र न को प्र का र द गारि मि न मे य दी मे न रि वं मे मि र च ॥
 मि ला इ ये ॥ **ररी मे दा की करि म री हो ॥** क चो री मे दा मे उ र्द की पि ठी
 मं म सा ला मि र न ॥ गारि हो छे छु गारि धी मे न रे ॥ न थां मे दा से र ॥
 मं ॥ पा व मी र ने न को मो न दे प्र री क रे ॥ सो ना मे उ र्द की पि ठी
 ने न गारि मि र च सो प्र थ गारि गारि स व स व मी मे क रे ॥ को हो न
 ॥ गारि हो य दी मे न रे ॥ भी न र लो न गारि स र न क र्द क र्द वा
 प्र के म र धी मे न स्यो लो वा म रें व रा उ र्द की पि ठी को व स न को
 स र न को क र्द ग लो व के प्र ल मि थो व रा व र व ल क री हो ॥ एक
 र स हो य ॥ प्रे म न वां न मे म रि सु ह वां धि म ही ना र क लो ध प
 मे र ह ॥ व र प क हो ई न व मी न र ध रे ॥ इ ध को पे डा लो वा न
 स्यो लो वा को पा क च ना की दा र प्र थ म मी नो स की च व र धी
 इ र ग मि ला इ ने ली क री हो ॥ से र ॥ मे पा व धी गारि हो ॥ न न क
 वे लो म ना नो क री हो ॥ न व लो ग र्द लो चो गी री गारि न री पे र

नहोई नवनामो नरनादि हो। पारो करे नो। रां न न हो। नो न
 दि क जा रे। १॥ मे द क मे छे न। ॥ २॥ वा ना को प्र न च न के भ
 ना। ही ग को व द र दे म को जा रे। ३॥ क चे च ना हें द कु च न रे च को न
 र के वि र च न रे। ४॥ ना न के द क वा फ के कु च न के मि र च न रे। ५॥
 ५॥ ज्ञा हा पी। मि के हो ग जा दि जा रे। ६॥ ही वा दि के। ७॥ स र न को र ना
 न की सी नि गा दो भ रे। ८॥ भे ग की दा रा म जो र छे क के चो रा वा फ
 ८॥ क च ना र को क नी छे क के नो र के। ९॥ क चे म र न र के। १०॥
 १०॥ ज्ञा हा की वा हो। ११॥ क ही को गो दि। १२॥ मि र च की। १३॥ वे स न की। १४॥ भे
 ग की। १५॥ इ र को प को रो। १६॥ भे ग की प को रो। १७॥ मे धी की। १८॥ भे स न
 की। १९॥ ही की। क च दी या की। २०॥ वे ग न की। २१॥ जी र की। २२॥ स
 कर क र की। २३॥ स र न ना के प्र न की। २४॥ स र वी की। २५॥ क के ही
 की। २६॥ पं न की। २७॥ र ना न की। २८॥ व छु ज्ञा की। २९॥ क च नो
 र की। ३०॥ क चे च ना की। ३१॥ क चे म र र की। ३२॥ भो रा की। ३३॥
 चो रा के प्र न की। ३४॥ र व र वं न की। ३५॥ भ ना स की। ३६॥ भा पु
 रि के प्र न की। ३७॥ क चे सि द्या जा की। ३८॥ को र ना की। ३९॥ भे द की
 ४०॥ प के ज्ञा म की। ४१॥ क ची ज्ञा पी वां द के। ४२॥ व र क नी की। ४३॥
 ज्ञा व ज की। ४४॥ भ म ली की। ४५॥ निया की। ४६॥ क रे ना की
 ४७॥ सो फ की। ४८॥ चू का की। ४९॥ र के म ल ना हा की। ५०॥ क
 म न के ज र की। ५१॥ हो की। ५२॥ रे ली के प्र न की। ५३॥ क म
 र न की। ५४॥ स र र के प न की। ५५॥ पो र के प ना की। ५६॥ भो
 र की। ५७॥ न म ना की। ५८॥ र वी र की। ५९॥ ज्ञा पी या की। ६०॥ ना
 र की। ६१॥ ने न ना की। ६२॥ स र स्यो की भा जी की। ६३॥ र र की भा
 जी की। ६४॥ च ना की भा जी। ६५॥ वा लो र की। ६६॥ मि र की। ६७॥
 क चे के ना की। ६८॥ के ना के रं भ क ने गि री की। ६९॥ क चे प न भ
 की। ७०॥ क रो ना की। ७१॥ प्र ल की। ७२॥ ना रे जी की। ७३॥ छु हा र की

६४॥ स्व को ग की। ६५॥ सार व की। ६६॥ सो ठ की। ६७॥ नो ग की। ६८॥ ज्ञा प फ
 ६९॥ न की। ७०॥ छु र की। ७१॥ ज्ञा हा की। ७२॥ मि न की। ७३॥ छे क र के से
 ग र की। ७४॥ र व र की। ७५॥ वे स न मे ही ग लो न ह र दी मि र
 च ना र ज्ञो ना र पो। ७६॥ हो र न व था पी मे धी बु पा र र र छु रो सो
 च ना र की सी क न री करो पो। ७७॥ मे भे न को रे रा पी मे न थ क ही मे
 व र की की सी क न री करो पो। ७८॥ नो न क दा मे। ७९॥ नो न के द क वा व नी क च न रे। ८०॥ न कं
 न थ क छे म। ८१॥ नो न क दा मे। ८२॥ नो न के द क वा व नी क च न रे। ८३॥ न कं
 भो मे ही मे छे कि भ न को ना ही म थं चा म र को च न। ८४॥ नो न मि र च
 को हे न क दी की ना र ज्ञो ना व सो ठे र्था क। ८५॥ वा स क र कं र के
 छे र के क वे स न ह र दी को मि र रं च क ज न ना र रं। ८६॥ मे च ह र
 प र प क हो र न व थं र पी हो हो। ८७॥ नि न नी ना र र स र र हो प न व
 उ ना र रे। ८८॥ मे ठ कु र को वि दि। ८९॥ च ना भू जि के छी ल का स र न
 सि रा। ९०॥ चो लो नो र से र। ९१॥ भू जि से र। ९२॥ र र उ र की छु री म न
 कं ग की। ९३॥ वा म र। ९४॥ नू र की दा र से की। ९५॥ उ वा र सो ठ से की
 वे स र भ र। ९६॥ सो दे जी रा से के पे स र भ र। ९७॥ र र दी से की पै स। ९८॥ म र
 डे र वे स म र री ग पु र। ९९॥ प र स व पी स के छे नि रा व नो। १००॥ पा नी मे
 नो र व ज्ञा म ना वा छे के व ल सो मि र। १०१॥ नो न सो मि र नो भ मं
 रा ना रं। १०२॥ न व र की र थो र छु का र पी मे भू जि नि गु नी चा स नी प र
 प। १०३॥ क उ र के को च न से र पी मे भू जि जो गु नी चा स नी छु री थो
 मे दा पा व। १०४॥ वे स न म ग र को च न पा व। १०५॥ चो रा को च न पा व। १०६॥
 रो न्ना रो भू जि प व र थ ना र प र प क की र र नो व र ना थं चा स
 नो। १०७॥ ना दा म पा व। १०८॥ चि रे जी क र स क र के र छे। १०९॥ के ज्ञा थ से
 र क र दी मे न र र नी चा स नी मे न र। ११०॥ नो न पा व मे दा। १११॥ पा व मे स
 न न ना थ पा व उ र को च न मो न पा व। ११२॥ ना दी क चो री की ना
 र के र दी मे न र री चा स नी मे र डी री प र र न री जो न व
 र ना की। ११३॥ क व ना के स री। ११४॥ ज्ञा पा सो मि र नी चे र क ला २४॥ भू

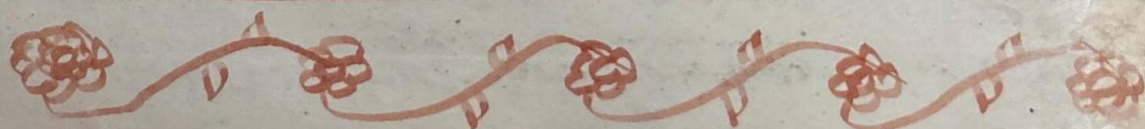
भाव.
१७८

छापासिखररा चोखाकीखी॥३॥नालछापावासोदी॥४॥हस्यो
छापा॥खनमंशजलेवीलाडूवूदीनी॥५॥गुलावीछापाखोरचो
खानी॥मखानानी॥संजावनी॥बुईछापा॥मेवाकीखोरसिखर
न॥६॥हवासीछापा॥गुलासंजाव॥जंगलीछापा॥सुकोली
लोमेवाठोर॥७॥पीरोछापासीरासेवकेलडुकारेबापूवापि
ठाईमेवा॥८॥वागनाससुपेदठोर॥९॥इतिश्रीहरिरायजी
कृतनथांश्रीगोकुलनाथजीकृतभावभावनांनित्यकीत
थांवर्षदिनकेउत्सवनकीभावनासंपूर्णम्॥समाप्तम्॥
नथांश्रीमिनीकीविधि संपूर्णम्॥लिखनम् श्रीमद्रोकुलजी
मध्येलिखियाभूराभाईतुलारामब्राह्मणसनाटचनेठिका
नोदरवाजेपरपतितपावनपासकोठेकेजोकोईवैष्णववां
चेअवकाशकरेताकोनेश्रीकृष्णभगवदस्मरणवंचनाजीश्रेष्ठ
जोकोईवद्वत्तभदेववांचेनिनकोसाष्टांगदंडवतवंचनाजी
केमाधिकं वैभक्तुका ११ गुरुकर॥श्रीसंवत् ॥ १८६३॥

श्लोक॥ यादृशंपुस्तकंहृष्टा॥ तादृशंलिखितंमया॥
यदिशुद्धंअशुद्धंवा॥ ममदोषोनदीयते॥१॥

दोहा॥ राखिलेइजलतैलते॥ मूरखहाथनदीन॥
दृढकरिराखेयत्नते॥ पुस्तकसदोनवीन॥१॥

दोहा॥ जगमेमिलनअनूपहे॥ भगवदीयनकोसंग॥
॥ जिनकेसंगप्रतापते॥ होतश्यामसोरंग॥१॥



[illegible]

श्री

[illegible]

अथ लक्ष्मीपत्रलिख्यन्ते॥

चरणचिह्न की भावना ॥

दशराचरणमेप्रथमद्वन्द्वकेचिह्नकोभाव०

दूसरे चक्र चिह्न को भाव ॥

तीसरे ध्वजा के चिन्ह को भाव ॥

चतुर्थ कमल के बिन्दु को माव ।

पांचमोजवकेचिन्हकोभाव॥

छटे प्रकुं सके चिह्न को माव ॥

सातमेउर्द्धरेखाकेचिह्नकोभाव॥

वोमघररामेप्रथमचिह्नगदाकोभाव॥

दूसरे कमल के चिह्न को पाव॥

तीसरे रथ के चिन्हों का भाव ॥

चतुर्थसक्तिकोविन्दकोमाद॥

पांचमे मीन के चिन्ह को भाव ॥

छटे वेदी के चिह्न को भाव ॥

सातमेकुंडलकेचिह्नकोभाव॥

प्रथमनगकेचिह्नकोभाव॥

नित्य की सेवा की भावना ॥

मंदिर के द्वार के भाव ॥

मंदिर के किवाड़ न को माव ॥

मंदिरकोभाव॥

घटानांदकीभावना॥

से खनांव की भावना ॥

मित्र्याकी भावना॥

नक्रियानकीभावना॥

स्तुती
१७८

पानों	१०	सुखवस्त्रकीभावना॥
पानों	१०	मारीकीभाव॥
पानों	१०	मंगलभोगकीभाव॥
पानों	११	जगायवेकीभावना॥
पानों	११	टेराकीभावना॥
पानों	१२	मंगलाप्रारत्नोंकीभावना॥
पानों	१२	अंगारकीभावना॥
पानों	१४	मुरलीकीभाव॥
पानों	१५	चिबुककीभाव॥
पानों	१५	वेसरिकीभाव॥
पानों	१६	तिलककीभाव॥
पानों	१६	कुंडलकीभाव॥
पानों	१६	मुकटकीभाव॥
पानों	१६	कुल्हेकीभाव॥
पानों	१६	सेहराकीभाव॥
पानों	१७	टोपीकीभाव॥
पानों	१७	विधारेकीभाव॥
पानों	१७	वेनीकीभाव॥
पानों	१७	चंद्रकाकीभाव॥
पानों	१७	श्रीस्वामिनीजीकेअंगारकीभाव॥
पानों	२१	वेणुवेनकीभाव॥
पानों	२२	मंदिरवस्त्रकीभाव॥
पानों	२३	घैयाकीभाव॥
पानों	२४	खिलोनानकीभाव॥
पानों	२४	राजभोगकीभावना॥

[illegible]

२५

२५

25

25

25

20

28

30

三

天

天

8

४२

11

10

11

11

2

48

3

4

五

संख्योदिकको भाव

छाककीभावना॥

खेड पाठकोभाव॥

चोपटकोभाव ॥

सतरंजंतथावाधवकरीकीभावनां॥

खिलो नानकी भावने ॥

दर्पनकीभावना॥

पेटेकी भावना ॥

उत्पादनको भाव ॥

संध्याकी भावना ॥

उत्सव की सज्जत ॥

माहपदवदी ७ को भाव ॥

जन्माष्टमी को याद ॥

छहो पूजनकीविधि ॥

पलना की विधि //

पलन को भाव

राधाष्टमीकीभावनां॥

दांनराकादसीतयां कामनद्वादसीकानि

सांझी को भाव ॥

विजेद समीकोभाव ॥

सरदप्रस्योकोमाव ॥

धन ते रस को भाव ॥

रूपचोदसको भाव ॥

दिवारीकीभावना ॥

सूची-
१८०

पांनो	५७	हटरीकी भावना॥
पांनो	५८	बोघड़को भाव॥
पांनो	५८	अनकूटकी भाविधि॥
पांनो	५८	गोवर्द्धन पूजा गायरिखलायवेको भाव॥
पांनो	६०	अनकूटकी भावना॥
पांनो	६२	इंद्रकोपको भाव॥
पांनो	६२	भाईहजको भाव॥
पांनो	६३	गोपाष्टमीको भाव॥
पांनो	६४	अक्षयनोमीकी भावना॥
पांनो	६४	हरिप्रबोधनीको भाव॥
पांनो	६४	व्याहपेलको भाव॥
पांनो	६५	कुलदेवी पूजनकी भावना॥
पांनो	६७	श्रीगिरधरजी श्रीरघुनाथजी के जन्मो-
पांनो	६७	त्सव पत्नीनको भाव॥
पांनो	६७	रिखिपत्नीनको भाव॥
पांनो	६७	चीरचुरायवेकी भावना॥
पांनो	६८	सीतकालकी सांमिग्रीको भाव॥
पांनो	७१	चीरचोरिकदमपरविराजेताको भाव॥
पांनो	७२	श्रीगोकुलनाथजी के जन्मदिवसको भाव
पांनो	७२	श्रीगुसांईजी के जन्म उत्सवको भाव॥
पांनो	७४	छेरिनुको भाव॥
पांनो	७४	मकरसंक्रान्ति को भाव॥
पांनो	७५	वसंतहोरीकी भावना॥
पांनो	७६	वाजेनको भाव॥
पांनो	८६	माहुसुदी ७ को भाव॥

पांनं	८८	ब्राह्मणभेषकीभावना॥
पांनं	८९	मनिहारिनलीला॥
पांनं	९०	नाइनलीला॥
पांनं	९१	दोनलीला॥
पांनं	९२	पनघटलीला॥
पांनं	९२	होरीशंतेकीभावना॥
पांनं	११४	लीलाभावना॥
पांनं	११७	मानकोभाव॥
पांनं	११८	श्रीनाथजीकोपाटउत्सव॥
पांनं	११९	होलाएककोभाव॥
पांनं	१२०	होरीकीभावना॥
पांनं	१२१	शेलउत्सवकीभावना॥
पांनं	१२७	दुतीयापाटकोभाव॥
पांनं	१२८	नरेसंबत्सरकीभावना॥
पांनं	१२९	रामनोमीकोभाव॥
पांनं	१२९	श्रीभुल्लाजीकोउत्सव॥
पांनं	१२९	मेखसंक्रांतिकोभाव॥
पांनं	१२९	श्रीप्राचार्यजीमहाप्रभुनकोउत्सव॥
पांनं	१३१	पनभोगकीरीति॥
पांनं	१३२	आखातीजकोभाव॥
पांनं	१३४	रसिंहचतुर्दसीकोभाव॥
पांनं	१३४	श्रीगंगाजीकोभाव॥
पांनं	१३५	श्रीगंगायमुनासमागम॥
पांनं	१३५	श्रीयमुनाजीकोभाव॥
पांनं	१३८	स्नानयात्राकोभाव॥

सूची-
१८९

पानां १४२
पानां १४२
पानां १४५
पानां १४६
पानां १५१
पानां १५१
पानां १५१
पानां १५२
पानां १५२
पानां १५३
पानां १५३
पानां १५४
पानां १५५
पानां १५६
पानां १५७
पानां १५८
पानां १५९
पानां १६०
पानां १६०
पानां १६१
पानां १६२
पानां १६२
पानां १६३
पानां १६३
पानां १६५

सोरठनथांमुलीकोभाव॥
रथयानाकोभाव॥
वर्षारिजुकोभाव॥
कुंजकोभाव॥
देवसयनीरकादसीकोभाव॥
असादीरुयोकोभाव॥
हिडोरकोभाव॥
ठकुरानीतीजकोभाव॥
पवित्राएकादसीकोभाव॥
पवित्राकोभाव॥
राणीकोभाव॥
गहराकोभाव॥
सातस्वरूपनकीभावनां॥
श्रीनवनीतप्रीयाजीकेस्वरूपकोभाव॥
श्रीमथुरानांथजीकेस्वरूपकोभाव॥
श्रीविठलनांथजीकेस्वरूपकोभाव॥
श्रीद्वारिकानांथजीकेस्वरूपकोभाव॥
श्रीगोकुलनांथजीकेस्वरूपकोभाव॥
श्रीगोकुलचंद्रमाजीकेस्वरूपकोभाव॥
श्रीमदनमोहनजीकेस्वरूपकोभाव॥
अष्टसप्तानकोभाव॥
वस्त्रप्राभुषणकोभाव॥
पजीरीकोभाव॥
सामिग्रीकोभाव॥
जयप्रकार॥

पांनो	१६५	श्रीगिरिराजमे-प्राठ द्वारनाकोभाव॥
पांनो	१६७	गुहभावना॥
पांनो	१६७	मेढकीभावना॥
पांनो	१६८	श्रीगिरिराजकेस्वरूपकीभावना॥
पांनो	१६८	छेरितुकोभाव॥
पांनो	१६८	नीलमरितु॥
पांनो	१६८	वर्षारितु॥
पांनो	१६८	सरसरितु॥
पांनो	१६८	हेमंतरितु॥
पांनो	१६८	एकदिनमेंछेरितुवर्तनाकोभाव॥
पांनो	१७०	श्रीचंद्रवलीजीकोप्रागटन॥
पांनो	१७१	प्रथमपर्वकोभाव॥
पांनो	१७१	यात्राकोभाव॥
पांनो	१७१	प्रागटनकोभाव॥
पांनो	१७२	अंगारकोक्रम॥
पांनो	१७२	संमिष्टीकरिवेकीरीति॥

नमो भगवते वासुदेवाय